अहिंसा, आगम और विज्ञान से आलोकित श्रेष्ठतम पत्रिका

भाव विज्ञान

BHAV VIGYAN

चितौड़गढ़ का कीर्ति स्तम्भ और मुनिश्री १०८ आर्जवसागर जी महाराज

वीर निर्वाण संवत् - 2538

चैत्र शुक्ल पक्ष, वि.सं. 2069, मार्च 2012

वर्ष : छह

अंक : उन्नीस

मूल्य : 10/-

मूकमाटी

स्वयं पतिता हूँ
और पतिता हूँ औरों से,
.... अधम पापियों से
पद दलिता हूँ माँ!

सुख-मुक्ता हूँ
दु:ख युक्ता हूँ
तिरस्कृत त्यक्ता हूँ माँ!

इसकी पीड़ा अव्यक्ता है
व्यक्त किसके सम्मुख करूँ!

क्रम-हीना हूँ
पराक्रम से रीता
विपरीता है इसकी भाग्य रेखा।

यातनायें पीड़ायें ये!
कितनी तरह की वेदनायें
कितनी और......... आगे

कब तक .... पता नहीं
इनका छोर है या नहीं!

श्वास-श्वास पर
नसिका बन्द कर
आर्त-घुली घूंट
बस
पीती ही आ रही हूँ
और
इस घटना से कहीं
दूसरे दु:खित न हों
मुख पर घूंघट लाती हूँ
..........घूंट
पीती ही जा रही हूँ,
केवल कहने को
जीती ही आ रही हूँ।

क्रमशः........

आगामी प्रमुख पर्व एवं तिथियाँ

2 अप्रैल	- भ. सुमतिनाथ जन्म/ज्ञान/मोक्षकल्याणक	19 मई	- भ. शांतिनाथ जन्म/तप/मोक्ष कल्याणक
4 अप्रैल	- भ. महावीर जयंती (जन्म कल्याणक), मुनि प्रमाणसागर, मुनि आर्जवसागर आदि 8 मुनिदीक्षा (पच्चीसवाँ रजत जयंती दीक्षा वर्ष)	25 मई	- भ. धर्मनाथ मोक्षकल्याणक
		26 मई	- श्रुतपंचमी
		9 जून	- कोकिला पंचमी
4-6 अप्रैल	- रत्नत्रय व्रत	11 जून	- भ. विमलनाथ मोक्षकल्याणक
20 अप्रैल	- भ. नमिनाथ मोक्षकल्याणक	18 जून	- रोहिणी व्रत
22 अप्रैल	- भ. कुन्थुनाथ जन्म/तप/मोक्ष कल्याणक	26 जून	- भ. नेमीनाथ मोक्षकल्याणक
24 अप्रैल	- अक्ष तृतीया	26 जून	- अष्टान्हिका व्रत प्रारंभ
27 अप्रैल	- भ. अभिनंदननाथ गर्भ/मोक्ष कल्याणक		

भगवान महावीर आचरण संस्था समिति

रजि.नं.: 01/01/01/17654/07

कार्यालय : एम-8/4 गीतांजली काम्प्लैक्स, कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल फोन : 0755-2673820

सम्पर्क सूत्र :

महामंत्री	संयुक्त सचिव	कोषाध्यक्ष	उपाध्यक्ष	अध्यक्ष
डॉ. अजित जैन	**अरविन्द जैन, पथरिया**	**इंजी. महेन्द्र जैन**	**राजेश जैन 'रज्जन'**	**डॉ सुधीर जैन**
94256 01161	दमोह		दमोह	9425011357

सदस्य -**पवन जैन, श्रीमती संगीता जैन**

संरक्षक : श्रीमती शीलरानी नायक, पनागर, श्री सुनील कुमार जैन, श्री महावीर प्रसाद जैन, सतना, श्री राजेन्द्र जैन कल्लन, दमोह, **विशेष सदस्य : दमोह :** श्री मनोज जैन दालमिल, श्री महेश जैन दिगम्बर, श्री संजीव जैन शाकाहारी, श्री तरुण सर्राफ, श्री पदम लहरी **सदस्य : जयपुर :** श्री शांतिलाल वागड़िया, **भोपाल :** श्री अविनाश जैन, श्री अरविंद जैन, श्री अनेकांत जैन।

रजिस्ट्रेशन क्रं. **MPHIN/2007/27127**

त्रैमासिक

भाव विज्ञान

(BHAV VIGYAN)

वर्ष-छह
अंक-उन्नीस

शुभाशीष

संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी
के धर्म प्रभावक परम शिष्य परम पूज्य
मुनिश्री १०८ आर्जवसागर जी महाराज ।

● *परामर्शदाता* ●
डॉ. प्रोफेसर एल.सी. जैन
जबलपुर, मोबा.: 9425386179
पंडित मूलचंद लुहाड़िया
किशनगढ़ (राजस्थान) मोबा.: 9352088800

● *सम्पादक* ●
श्रीपाल जैन 'दिवा'
शाकाहार सदन, एल.आई.जी.-75, केशर कुंज, हर्षवर्धन नगर, भोपाल-462003 (म.प्र.) फोन : 4221458

● *प्रबंध सम्पादक* ●
डॉ. सुधीर जैन, प्राध्यापक
85, डी.के. काटेज, ई-8 एक्सटेंशन, अरेरा कालोनी, भोपाल मो. 9425011357

● *सम्पादक मंडल* ●
डॉ. सी. देवकुमार, प्रमुख वैज्ञानिक, नई दिल्ली
पं. जय कुमार 'निशांत', टीकमगढ़ (म.प्र.)
डॉ. अजित कुमार जैन, भोपाल (म.प्र.)
डॉ. संजय जैन, पथरिया, दमोह (म.प्र.)
डॉ. श्रीमती अल्पना जैन (मोदी), ग्वालियर (म.प्र.)
इंजी. महेन्द्र कुमार जैन, भोपाल (म.प्र.)
श्री सुनील वेजीटेरियन, दमोह (म.प्र.)

● *कविता संकलन* ●
पं. लालचंद जैन 'राकेश', भोपाल

● *प्रकाशक* ●
श्रीमती सुषमा जैन धर्मपत्नी डॉ. अजित जैन
MIG-8/4, गीतांजली काम्प्लैक्स, कोटरा, भोपाल
फोन : 0755-2673820, 9425601161
email : bhav.vigyan@yahoo.co.in

● *आजीवन सदस्यता शुल्क* ●

शिरोमणी संरक्षक	:	51,000
पुण्यार्जक विशेषांक संरक्षक	:	24,500
परम संरक्षक	:	21,000
पुण्यार्जक संरक्षक	:	18,000
सम्मानीय संरक्षक	:	11,000
संरक्षक	:	5,100
विशेष सदस्य	:	3100
आजीवन सदस्य	:	1100

कृपया सदस्यता शुल्क प्रकाशक के एवं रचनाएँ प्रबंध सम्पादक के पते पर भेजें।

पल्लव दर्शिका

विषय वस्तु एवं लेखक — **पृष्ठ**

1. मानवता की रक्षा — 2
''सम्पादकीय'' श्रीपाल जैन 'दिवा'

2. तप और त्याग की प्रतिमूर्ति-महाकवि आचार्य ज्ञानसागर — 4

3. परमार्थ तक पहुंचने के लिए अर्थ का त्याग आवश्यक — 9
प्रवचनः आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज

4. परिचय की दृष्टि में पच्चीस वर्ष की प्रभावना — 11
प्रस्तुतिः डॉ. अजित जैन एवं डॉ. सुधीर जैन

5. गणितसार संग्रह — 18

6. भगवान महावीर स्वामी जयंती के पावन अवसर पर — 20
डॉ. अजित कुमार जैन

7. सम्यक् ध्यान शतक — 23
मुनि आर्जवसागर

8. धर्मप्रभावना एक दृष्टि — 24

9. गुरुवर की शताधिक विशेषताएँ — 26
प्रस्तुतिः इंजी. महेन्द्र जैन

10. ध्यान, आसन और आहार में मानस स्थिति — 28
डॉ. संजय कुमार जैन

11. भाव विज्ञान परीक्षा बोर्ड, भोपाल — 30

12. प्रश्नोत्तरी — 33

लेखक एवं विचारों से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
भाव विज्ञान से संबंधित समस्त निर्णयों/न्यायों के लिए न्याय क्षेत्र भोपाल ही मान्य होगा।

सम्पादकीय

मानवता की रक्षा

-श्रीपाल जैन 'दिवा'

वर्तमान में जैन धर्म की त्रिकाल चौबीसी का उल्लेख मिलता है। अर्थात् भूतकाल के चौबीस तीर्थंकर, वर्तमान काल में चौबीस तीर्थंकर और भविष्य काल के चौबीस तीर्थंकर जो होने वाले हैं। वर्तमान काल के भगवान आदिनाथ प्रथम तीर्थंकर हुए वे जैन धर्म के प्रथम महान प्रवर्तक हुए हैं। वे प्रवर्तक थे संस्थापक नहीं। क्योंकि उनके पहले भूतकाल चौबीसी हुईं जिन्होंने जैनधर्म का प्रवर्तन किया होगा। ऐसी अनेक चौबीसी भूतकाल में हुई और उन्होंने जैनधर्म का पुनः-पुनः प्रवर्तन का महान कार्य किया होगा। यह क्रम अनादिकाल से चलता आ रहा है। अतः जैनधर्म के संस्थापक का नाम-निर्णय सम्भव नहीं है। वर्तमान में जैन धर्म का संस्थापक किसी एक तीर्थंकर को मानने का मतलब उनके पूर्व जैन धर्म का अभाव रहा है। ऐसी मान्यता जैन धर्म की प्राचीनता की आयु की न्यूनता का सद्भाव करती है। इसी प्रकार वर्तमान चौबीसी के अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी को भी जैन धर्म के संस्थापक की संज्ञा दी जा रही है। जो समीचीन मत नहीं है। सभी तीर्थंकर जैन धर्म के महान प्रवर्तक रहे हैं। जैन धर्म तो अनादि काल से चला आ रहा है। संस्थापक कौन रहा है यह तो अज्ञात ही है। हमें प्रथम तीर्थंकर भगवान आदिनाथ को भी संस्थापक की संज्ञा से विभूषित नहीं करना चाहिए। वे भी जैन धर्म के महान प्रवर्तक ही रहे हैं। जब मुनि आदिनाथ प्रथम बार आहार को निकले तो विधि का ज्ञान नहीं होने के कारण पड़गाहन नहीं हो सका था। छः माह बाद पुनः आहार को उठे तो राजा श्रेयांस ने पूर्व जन्म की स्मृति के आधार पर पड़गाहन किया और इक्षुरस का आहार दान दिया। अर्थात इनके पहले भी जैन धर्म की विद्यमानता का सद्भाव रहा होगा।

ऐसे जैन धर्म के महान प्रवर्तक भगवान आदिनाथ की पावन जन्म तिथि चैत्र कृष्ण नवमी दिनांक 16 मार्च 2012 को सम्पूर्ण भारत भूमि पर सभी भक्तों ने धूम-धाम से मनाई। अहिंसा का पाठ सम्पूर्ण मानवता को पढ़ाने वाले की पावन जन्म तिथि पर शासन को खबर ही नहीं है कि जिस अहिंसा से विश्वशांति स्थापित की जा सकती है उसके जनक की पावन जन्म तिथि को अवकाश घोषित कर जन-जन को अहिंसा का पाठ पढ़ने का अवसर दे जिससे सम्पूर्ण विश्व अहिंसा के मार्ग पर चलने का प्रयास कर सके। वर्तमान में मानवता बारूद के ढेर पर बैठी हुई भयभीत है। परमाणु मिसाइलों के मुँह एक दूसरे देशों की ओर आक्रमण की ताक में हैं। कब मानवता का सर्वनाश हो जावे कुछ कहा नहीं जा सकता। ऐसे हिंसक हथियारों के बीच एक मात्र आदिनाथ की अहिंसा ही मानवता की रक्षा कर सकती है। अहिंसा ही का करुणा का चिन्तन विश्व मानवता की रक्षा कर सकता है। अतः भारत देश के शान्तिदूत अहिंसा के जनक भगवान आदिनाथ के जन्मदिन को अवकाश घोषित कर अहिंसा-करुणा के चिन्तन करने का जन-जन को अवसर दें। तब विश्व की संस्था संयुक्त राष्ट्र संघ आदिनाथ जी के जन्मदिन को अहिंसा-दिवस के रूप में मनाने की घोषणा करे। संसार का हर देश अहिंसा की शरण में आकर ही

सुरक्षित रह सकेगा। जैन समाज की सभी सामाजिक-धार्मिक संस्थाओं को इस बात पर बल देकर प्रयास करना चाहिए कि ऋषभ जयंती को देश-विदेशों में धूम धाम से मनाकर अहिंसा का प्रचार-प्रसार हो।

अभी 4 अप्रैल को वर्तमान के अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर जयंती पर प्रदूषण से पर्यावरण को बचाने का अभियान प्रारम्भ किये जा सकते हैं। प्रदूषण मानवता को लीलने के लिए मुँह बाये खड़ा है और हम मुँह ताकते खड़े हैं। मानवता की रक्षा के लिए पर्यावरण की रक्षा का बीड़ा उठाना ही पड़ेगा। धरती को बचाने के लिए जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण, आदि से मुक्ति के प्रयास अत्यावश्यक हो गये हैं परंतु लोभी लालची देशों की धनार्जन के लिए लार टपक रही है वे मानते ही नहीं। उद्योगों के माध्यम से धनार्जन के लालच में धरती को प्रदूषणों से पाटे जा रहे हैं। लोभ को त्याग का पाठ अहिंसा-करुणा ही पढ़ा सकती है और ये अहिंसा करुणा को जीवन में उतारकर जीने वाले वर्तमान में दिगम्बर जैन साधु सौभाग्य से विद्यमान हैं। उनमें आचार्य शिरोमणि तप-ध्यान-ज्ञान के धनी करुणासागर श्री विद्यासागर जी महाराज ससंघ करुणा की गंगा बहाने में अहर्निशि लगे हुए हैं। उनके तपस्वी शिष्य उस करुणासागर की अमृत धारा बनकर बह रहे हैं। कोई सुधा के सागर हैं तो कोई आर्जव के सागर हैं, कोई समता के सागर हैं तो कोई प्रमाण के सागर हैं, कोई क्षमा के आगर हैं तो कोई नियम के सागर हैं कोई अभय के नागर हैं तो कोई अजित के सागर हैं। ऐसे ही अन्य दिगम्बर आचार्य व साधु मानवता को बचाने के सद्प्रयास में संलग्न हैं। जो स्तुत्य व अनुकरणीय हैं।

प.पू. मुनि श्री आर्जवसागर जी महाराज के विहार में जो भक्त साथ चल रहे हैं उनसे संकेत प्राप्त हो रहे हैं कि मुनिश्री सिद्धक्षेत्र गिरनार जी की ओर गमन कर रहे हैं। भक्त लोग महावीर जयंती पर्व पर मुनिश्री आर्जवसागर जी का 25 वाँ दीक्षा दिवस धूम-धाम से मना रहे हैं। यदि मुनिश्री सिद्धक्षेत्र श्री गिरनार जी पधारे तो तय है कि भक्त लोग गिरनार जी तीर्थ को पंडों के पंजे से मुक्त कराने का प्रयास तेज कर देंगे। उस समय सम्पूर्ण विश्व के जैनों का साथ व समर्थन एक बारगी मिलना चाहिए। अभी जो भी प्रयास चल रहे हैं वे भी इस अभियान की नींव के मजबूत पाषाण हैं। उन्हें विस्मृत नहीं किया जाना चाहिए। सम्मान के साथ उनके साथ होकर मिलकर प्रेम से सशक्त रूप से संगठित हो अपने अधिकारों को हाँसिल कराने का दृढ़ प्रयास करना है।

जय मानवता - जय अहिंसा

बाल छात्र

पाँच वर्ष के 'पीलू'। पिताजी उसे लेकर शाला में नाम लिखवाने पहुँचे। आँख फाड़े-फाड़े पीलू कमरे को देखता, तो कभी छात्र-समूह को और कभी सामने कक्ष की दीवाल पर टँगे श्यामपट को। तभी लिखने लगे प्रधान अध्यापक रजिस्टर पर नाम, बालक पीलू अब छात्र विद्याधर बन गए।

साभार : यादें विद्याधर की

प्रसंग : 7 फरवरी, 'आचार्य-पद' दिवस

तप और त्याग की प्रतिमूर्ति-महाकवि आचार्य ज्ञानसागर

भारत की आत्मा की पहचान और धरोहर है-दर्शन, अध्यात्म, सत्य, अहिंसा, अनेकान्त और अपरिग्रह। भारत राष्ट्र की धर्मधरा कोआलोकित करने वाली महान विभूतियों में प्रमुख महावीर, बुद्ध, राम, कृष्ण, आदिशंकराचार्य, गुरु नानकदेव और महात्मा गाँधी हैं। इन भव्य आत्माओं द्वारा अपने जीवन में अपनाया गया पथ आज भी जीवन्त है। हमारी शस्यश्यामला वसुन्धरा के जन-जन को मुक्ति का मार्ग इन्हीं वन्दनीय आत्माओं से सुलभ हुआ है और भविष्य में होता रहेगा। जीवन इस अन्तहीन प्रवाह के बीच संसार के उस पार जाने का कोई सेतु बना लेना, उस पर कदम दर कदम स्वयम् चलना और दुनिया को उस पार जाने के लिए सत्प्रेरणा देना, यदि यही महापुरुषों का आचरण है, तो ऐसी ही एक अमर आत्मा हमारे राष्ट्र के जीवन में महाकवि दिगम्बर जैनाचार्य ज्ञानसागर गत् शताब्दी में अवतरित हुई थी। इस महान विभूति ने लगभग 500 वर्षों से जैन संस्कृत साहित्य लेखन की विछिन्न सी हो चुकी परम्परा का पुनः प्रवर्तन किया और राष्ट्र भाषा भारत-भारती की श्रीवृद्धि में भी अनुकरणीय योगदान दिया।

महाकवि आचार्य ज्ञानसागर का लौकिक नाम भूरामल था। आपका जन्म 2 जून 1891 को (सीकर-राजस्थान) के राणोली ग्राम में खण्डेलवाल दिगम्बर जैन छाबड़ा कुल में सेठ सुखदेव जी के पुत्र श्री चतुर्भुज और माता घृतावरी देवी जी की कोख से हुआ था। प्रारंभिक शिक्षा राणोली ग्राम की पाठशाला से तथा क्वींस कॉलेज, काशी से 'शास्त्री' (स्नातक) शिक्षा उत्तीर्ण की। यहीं अध्ययन करते हुए आजीवन ब्रह्मचारी रहकर माँ सरस्वती और जिनवाणी की सेवा में अध्ययन-अध्यापन तथा साहित्य सृजन में ही अपने आपको समर्पित करने का संकल्प ले लिया था। जीवन के 50 वर्ष साहित्य-साधना, लेखन, मनन एवं अध्ययन में व्यतीत कर पूर्ण पाण्डित्य प्राप्त किया। ब्यावर में पण्डित हीरालाल शास्त्री ने आपके द्वारा रचित ग्रंथों एवं पुस्तकों को प्रकाशित कराने की बात कही, तब आपने कहा ''जैन वाँगगम की रचना करने का काम मेरा है, प्रकाशन आदि का कार्य आप लोगों का है।''

आचार्य ज्ञानसागर 'मंत्र', ज्ञान भारं क्रिया बिना' क्रिया के बिना ज्ञान भार स्वरूप है-को जीवन में उतारने हेतु त्याग मार्ग पर प्रवत्त हुए। 1949 में गृह त्याग कर दिया था। 1955 में आचार्य श्री वीरसागर जी से क्षुल्लक दीक्षा ग्रहण कर 'ज्ञानभूषण' कहलाये। 68 वर्ष की आयु में 22 जून, 1959 में आचार्य श्री शिवसागर जी से मुनि दीक्षा अंगीकार कर (खानिया-जयपुर) 'ज्ञानसागर' के नाम से विभूषित हुए। मन, वचन और काय से दिगम्बरत्व की साधना में लग गये। आप मुनि पद की सरलता और गंभीरता के साथ उच्च कोटी के शास्त्रज्ञाता, विद्वान एवं तात्त्विक वक्ता थे। शिष्यों में सर्वोपरि कन्नड़ भाषी आचार्य श्री

विद्यासागर तो आपकी जीवन्त कृति है जो आपको 'गुरु महाराज' 'गुरुजी' के नाम से प्रवचनों में याद करते हैं। आपका कहना था कि यदि सुख चाहते हो, तो दूसरों को दुःख मत दो। अपनी कषायों का त्याग करो, संतोषी बनो, इच्छाओं को सीमित करो, तभी सुखी बन सकोगे। आध्यात्म से परिपूर्ण निष्काम जीवन से आपको नैतिक और धार्मिक उत्थान की दिशा मिली। मुनिश्री ज्ञानसागर जी का संघ विहार करता हुआ नसीराबाद पहुँचा। यहाँ आपने 7 फरवरी, 1969 तदनुसार मगसरबदी दूज को श्री लक्ष्मीनारायण को मुनि दीक्षा प्रदान की। इस पुनीत अवसर पर उपस्थित समस्त जैन समाज तथा चतुर्विध संघ के सविनय निवेदन आचार्य पद ग्रहण करने के आग्रह को आपने स्वीकार कर लिया और आपको 'आचार्य पद' से सुशोभित किया गया। आचार्य-पद पर विराजमान हुए आपको आज 43 वर्ष बीत चुके हैं।

आचार्य श्री ज्ञानसागर जी की हार्दिक अभिलाषा थी कि उनके शिष्य उनके सानिध्य में अधिक से अधिक ज्ञानार्जन कर लें। वे अपने ज्ञान के अथाह सागर को शिष्यों में समाहित कर देना चाहते थे। आप सच्चे अर्थों में विद्वान-जौहरी और पारखी थे, बहुत दूर दृष्टि वाले थे। 1972 के वर्षावास में आपके संघ का चातुर्मास नसीराबाद में हुआ। अथक साधना, गहन चिन्तन, कठिन परिसह सहने से आचार्य ज्ञानसागर का शरीर उम्र के थपेड़ों से शिथिल होने लगा। अपने योग्यतम शिष्य विद्यासागर से कहा "विद्यासागर! मेरा अन्त समीप है। मेरी समाधि कैसे सधेगी? समाधि हेतु आचार्य पद का परित्याग तथा किसी अन्य आचार्य की सेवा में जाने का जैन आगम में विधान है।" अन्ततोगत्वा शिष्य विद्यासागर को श्रृद्धालुओं की उपस्थिति में कहा "मेरा शरीर आयु कर्म के उदय से रत्नत्रय-आराधना में शनैः शनैः कृश हो रहा है। अतः मैं यह उचित समझता हूँ कि शेष जीवनकाल में आचार्य पद का परित्याग कर इस पद पर अपने प्रथम एवं योग्यतम शिष्य को पदासीन कर दूँ। मेरा विश्वास है कि आप श्री जिन शासन संवर्धन एवं श्रमण संस्कृति का संरक्षण करते हुए इस पद की गरिमा को बनाये रखोगे तथा संघ का कुशलता पूर्वक संचालन कर समस्त समाज को दिशा प्रदान करोगे। इस पर जब मुनि श्री विद्यासागर ने इस महान भार को उठाने में ज्ञान, अनुभव और उम्र से अपनी लघुता प्रकट की, तो आपने कहा- "तुम मेरी समाधि दो, आचार्य पद स्वीकार कर लो। फिर भी तुम्हें संकोच है, तो गुरुदक्षिणा स्वरूप ही मेरे इस गुरुत्तर भार को धारण कर मेरी निर्विकल्प समाधि करा दो अन्य उपाय मेरे सामने नहीं है।" मुनि श्री विद्यासागर इस प्रस्ताव से काफी विचलित हो गये। उन्होंने काफी मंथन किया, विचार-विमर्श किया और अन्त में निर्णय लिया कि गुरुदक्षिणा तो गुरु को हर हालत में देनी ही होगी। अतः प्रणतिपूर्वक अपनी मौन स्वीकृति गुरु चरणों में समर्पित कर दी। शिष्य विद्यासागर जी का प्रश्न था- "जब आप नहीं होंगे और मैं विहार करूँगा, तब मुझसे धर्म प्रभावना किस प्रकार से हो सकेगी?" आपने उत्तर में कहा था कि -

''अप्रभावना नहीं करना ही सबसे बड़ी प्रभावना है।''

22 नवम्बर, 1972 को नसीराबाद में विशाल संख्या में उपस्थित श्रृद्धालुओं के बीच आचार्य-पद ग्रहण का अभूतपूर्व आयोजन हुआ। आचार्य ज्ञानसागर जी ने बहुत ही मार्मिक शब्दों में कहा - ''यह नश्वर शरीर धीरे-धीरे गिरता जा रहा है। मैं अब आचार्य पद का मोह छोड़कर पूर्णरूपेण आत्म-कल्याण में लगना चाहता हूँ। जैनागम के अनुसार ऐसा करना अत्यंत आवश्यक है और उचित भी है। ऐसा कहते हुए पूज्य आचार्य श्री ज्ञानसागर जी खड़े हुए और अपने से नीचे आसन पर बैठे शिष्य विद्यासागर जी को अपने स्वयं के उच्चासन पर बैठाकर आचार्य-पद देने व अपना आचार्य पद समाप्त करने की विधि शास्त्रोक्त क्रिया सम्पन्न कर नीचे आसन पर बैठ गए। मोह एवं मान-मर्दन की इस अद्‌भुत स्थिति को देखकर उपस्थित धर्मालुओं के जयघोष से सारा वातावरण गुँजायमान हो उठा। शान्ति होने पर मुनि ज्ञानसागर जी ने पूज्य 108 आचार्य श्री विद्यासागर जी को अपना आचार्य मानकर खड़े हो गये और सविनय निवेदन किया - ''आचार्य श्री! मैं आपके चरणों की सेवा में समाधि ग्रहण करना चाहता हूँ, मुझ पर अनुग्रह करें।'' इससे अधिक अहंशून्यता और आत्म उज्जवलता और क्या हो सकती है? जिसने भी यह परमपावन हृदयस्पर्शी दृश्य देखा वह सुना उसी की आँखे सजल हो गईं, मन भर आया। अनुपस्थित लोगों को अतिश्योक्तिपूर्ण लग सकता है, परंतु यह शत प्रतिशत सत्य है। सचमुच इतनी त्याग, तपस्या, ज्ञानाराधना, उदारता और मृदुता जैसे गुणों से संपन्न साधक महान आचार्य श्री ज्ञानसागर ही थे। इतनी सरलता थी उस विरागता और निस्पृहता की जीवन्त प्रतिमा में कि जिसने दक्षिण के कन्नड़ भाषी युवा बाल ब्रह्मचारी विद्याधर पर आचार्य पद सौंपने तक स्वयं में समाहित अगाध ज्ञान और विद्वता से आपूरित तेजस्वी व्यक्तित्व ही आपके वैशिष्ट्य का बोध करा देता था। उसको उन्होंने अहर्निश उपयोग शिष्य विद्यासागर जी पर किया और इतना प्रयोग किया कि इस अहिन्दी भाषी को हिन्दीभाषा, संस्कृत भाषी और प्राकृतभाषी बना दिया। निश्चय ही आचार्य ज्ञानसागर जी ने अपना सबकुछ ज्ञान न्यौछावर करके अपने ही जैसा अनमोल रत्नत्रयधारी रत्न तराश कर जैन समाज, जिनवाणी और जैनत्व को गौरवान्वित कर दिया है।

जीवन के अन्तिम समय में मुनि श्री ज्ञानसागर जी का चलना-फिरना बन्द हो गया था। वाणी भी मन्द हो चली थी। फिर भी आपकी दृष्टि, श्रवण और स्मरण शक्ति साथ दे रही थी। आपने-अपने नश्वर शरीर का ममत्व त्यागते हुए दिगम्बर जैन सन्त परम्परा के अनुसार दिन-प्रतिदिन रसों का त्याग प्रारंभ कर दिया। ज्ञान-ध्यान में लीन रहने लगे। मुनिगणों, श्रावकों और श्रृद्धालुओं के समक्ष अपने उत्कृष्ट शिष्य आचार्य विद्यासागर के सानिध्य एवं निर्देशन में विधिपूर्वक 'यम-सल्लेखना' को शान्त परिणाम से

वरण करते हुए ज्येष्ठ कृष्ण अमावस्या विक्रम संवत 2030 शुक्रवार 1 जून, 1973 को दिन में दस बजकर पचास मिनट पर नसीराबाद राजस्थान में नश्वर शरीर का जीवन की अंतिम बेला में आधी, व्याधी और उपाधि से मुक्त होकर शान्त भाव से परित्याग कर दिया था। आपका समाधिमरण ऐतिहासिक हुआ। दिगम्बर जैन मुनि परम्परा की यह उत्कृष्ट परिणति थी। स्मृति स्वरूप भक्तों ने समाधि स्थल पर एक भव्य छतरी का निर्माण किया है। आपका पार्थिव शरीर भले ही विसर्जित हो गया हो, परंतु आपके ज्ञान और वैराग्य की ज्योति निरन्तर प्रकाशित होती रहेगी और आने वाले हर साधक का मार्ग आलोकित करती रहेगी।

संस्कृत में आपके 9 ग्रंथों में से 4 महाकाव्य 'जयोदय', 'भद्रोदय', 'सुदर्शनोदय' और 'वीरोदय' सुप्रसिद्ध हैं। संस्कृत साहित्य जगत में महाकवि भारवि का ''किरातार्जुनीय'' माघ का 'शिशुपाल वध' तथा हर्षकृत 'नैषध चरित' रूप वृहतत्रयी के समकक्ष समालोचकों ने आचार्य ज्ञानसागर के 'जयोदय' को स्वीकार करते हुए 'वृहच्चतुष्टयी' नाम से समलंकरण किया है। डॉ. हरिसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.) के एम.ए. संस्कृत के पाठ्यक्रम में 'जयोदय' महाकाव्य सम्मिलित है। इस महाकाव्य के तृतीय संस्करण में तत्कालीन राष्ट्रपति महामहिम शंकरदयाल शर्मा ने लोकार्पित करते हुए इसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की थी।

आपके महाकाव्य शास्त्रीय, सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक और दार्शनिक दृष्टियों से कालिदास तथा कालिदासोत्तर काव्यों के मध्य में पूर्णतः योग्य है। काव्यों में अंत्यानुप्रास शैली है, मौलिकता है, दार्शनिक सिद्धान्त जन्य दक्षता है। कथा-वस्तु, चरित्र-चित्रण, भावपक्ष, वर्णन-विधान, परिवेश आदि की दृष्टि से अत्यंत सजीव और उच्चकोटि का है। आपकी रचनाओं से संस्कृत साहित्य के भण्डार की अभूतपूर्व श्रीवृद्धि हुई है। 2 डी लिट, 4 संस्कृत, 30 शोध तथा 11 लघु शोध हुए हैं। ऋषभावतार, भाग्योदय, गुण सुन्दर वृतांत, कर्तव्य पथ प्रदर्शन, सचित्र विवेचन, मानव धर्म, स्वामी कुन्दकुन्द और सनातन जैन धर्म, पवित्र मानव जीवन, सरल जैन विवाह विधि, तत्त्वार्थ दीपिका, विवेकोदय आपकी हिन्दी साहित्य में रचित अमूल्य संपदा है। मन, वाणी और कर्म की पवित्रता के लिए अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह जैसे पाँच सार्वभौम महाव्रतों के परिपालन की सत्प्रेरणा, उदात्त मानवीय जीवन-मूल्यों का जीवन में पुष्पित, पल्लवित और फलित करके अध्यात्मिक ऊँचाईयों का प्रतिवादन आपकी रचनाओं में हुआ है। चम्पू काव्यों और महाकाव्यों की सरस सर्जना करके संयमपूर्वक जीवन जीने का सर्वांगीण संदेश दिया। मानव समाज का कल्याण करने में आपकी काव्य क्षमता महाकवि अश्वघोष की काव्य सम्पत्ति से भी अधिक मूल्यवन्त है।

'दयोदय' चम्पू के नायक का जीवन पाठकों के मन पटल पर अहिंसा की दोहरी छवि बनाता है।'समुद्रदत्त चरित्र' का नामक सत्य और अस्तेय की समुचित शिक्षा देता है।'वीरोदय' का नायक श्री महावीर स्वामी के ब्रह्मचर्य के प्रति आस्था जगाता है।'जयोदय' का नायक अपरिग्रह के महत्व को अभिव्यक्त करता है।'सुदर्शनोदय' का नायक जीवन में आने वाले घात-प्रतिघात, जीवनोपयोगी सभी महाव्रतों (संयम) के पालन की शिक्षा के साथ व्यक्तित्व की पवित्रता की धैर्यपूर्वक रक्षा करते रहने का संदेश देता है। इस प्रकार आपका साहित्य समकेत रूप से मानव समाज का समग्र कल्याण करने की दिशा देता है।

महाकवि जैनाचार्य ज्ञानसागर सन्त शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी के दीक्षा और शिक्षा गुरु ही नहीं अपितु आधुनिक युग के समाज सृष्टा भी थे। आगम ही उनकी आँख थी। वे अन्त तक ज्ञान, ध्यान और तप के साधक रहे। वास्तव में आप एक प्रखर पण्डित, प्रबुद्ध सन्त, निष्ठावान साधक और स्व-पर कल्याण निरत् साधु थे।

संकलन - श्री निर्मलकुमार पाटौदी

महत्त्वपूर्ण पुण्य अवसर

[महावीर जयन्ती पर्व पर गुरु के सान्निध्य में 25 वाँ दीक्षा (रजत जयन्ती वर्ष) मनायें।]

संतशिरोमणी आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज के संस्कार दाता सम्यक्त्व उपदेश बहु भाषाविद तत्त्वचिंतक धर्म प्रभावक शिष्य मुनिश्री 108 आर्जवसागर जी महाराज का 25 वाँ दीक्षा महोत्सव महावीर जयन्ती महोत्सव जहाँ जिस स्थल पर मुनिश्री विराजमान रहेंगे वहाँ धूमधाम से मनाया जावेगा। ऐसे पवित्र दिन जो पुण्यात्मायें गुरुभक्ति करने गुरु सान्निध्य में आवेंगी उनका एवं रजत जयन्ती दीक्षा वर्ष के उपलक्ष्य में मुनिश्री से संकल्पित होकर धर्मायतन रक्षा, धर्म प्रभावना व धर्म संस्कार के 25-25 कार्य करने वालों का सम्मान किया जावेगा। अतः सहर्ष सपरिवार पधारकर पुण्यलाभ लें।

निश्चित स्थान हेतु संपर्क करें

1. नरेश जैन, सूरत - मो.: 09374715918
2. डॉ. अजित जैन, भोपाल मो.: 09425601161

परमार्थ तक पहुंचने के लिए अर्थ का त्याग आवश्यक

प्रवचन : आचार्यश्री विद्यासागर जी महाराज

बीनाबारह। परमार्थ तक पहुंचने के लिए अर्थ का त्याग आवश्यक है। वस्तु बेचें धर्म नहीं बेचें। वह सोना किस काम का जो कान तोड़ दे। कुंडल से कान की शोभा होती है। वह धन किस काम का जो धर्म से अलग काट दे। धन का उपयोग सात्विक कार्यों में होना चाहिए। धन का उपयोग अहिंसा के कार्यों में होना चाहिए। लोकतंत्र में लोग संग्रह छोड़कर लोक संग्रह होना चाहिए। अहिंसा बैंक में बिंदु जमा करने पर सिंधू की प्राप्ती संभव है। आज बैंकों में जमा धन का हिंसात्मक कार्यों में भी प्रयोग हो रहा है। अहिंसा धर्म का पालन करने वालों को भी इसका दोष लग रहा है। उपरोक्त विचार आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज ने अपने मंगल प्रवचनों में दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र, बीना बारह में आयोजित एक धर्मसभा में अभिव्यक्त किए। इसके पूर्व मंगलाचरण का सौभाग्य कोलकाता, चेन्नई, गया, जबलपुर, सतना, सागर के विशिष्ट अतिथियों के अलावा कुंडलपुर क्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष संतोष सिंघई, विमल लहरी, अजित कंडया, आर.के. जैन, मनीष नायक, रूपचंद जैन, संजय मेक्स, अशोक चावल, सुनील वेजीटेरियन आदि ने किया। मौके पर कुंडलपुर कमेटी की ओर से सतना पंचकल्याणक गजरथ महोत्सव समिति का गजरथ की आय की दान राशि का चेक कुंडलपुर मंदिर निर्माण हेतु समर्पित करने के लिए शाल व श्रीफल से सम्मान किया गया। प्रतिभास्थली, जबलपुर को भी सतना समाज द्वारा दान राशि का चेक भेंट किया गया। कुंडलपुर तक रेल्वे लाइन प्रस्तावित कराने की प्रक्रिया में सक्रिय सहयोग हेतु कमेटी द्वारा कोलकाता के प्रभावशाली श्रावक कैलाश पांडा, विनोद काला एवं संजय पहाड़िया का भी सम्मान किया। बीनाबारह में आचार्य श्री की प्रेरणा से खुलने वाले जैन डेयरी फार्म के लिए सर्वप्रथम सर्वाधिक 205 गाय दान करने हेतु नंदनलाल नायक परिवार के मनीष नायक, गिरीश अहिंसा, रजनीश नायक और संगीता नायक आदि परिवारजनों के साथ अन्य गायों का दान करने वालों श्रावकों ने आचार्यश्री को श्रीफल भेंटकर आशीर्वाद ग्रहण किया।

आचार्य श्री ने अपने मंगल प्रवचनों में कहा कि आज बैंकों में रखा धन किन हिंसात्मक कार्यों में लग रहा है इसे जानने की आवश्यकता है। अहिंसा प्रेमियों का धन मुर्गीपालन, कत्लखानों, मछली पालन आदि हिंसात्मक कार्यों में भी लग सकता है। वास्तव में यदि धन का उपयोग कृषि, गौपालन आदि कार्यों में लगाया जाए तो सात्विकता के साथ-साथ अनेक निर्धन, कमजोर, परिवारों के जीवन निर्वाह का साधन बन सकता है। ऐसे कार्यों में लगाया धन कभी व्यर्थ नहीं जाता तथा परमार्थ को भी साथ देता है। पाप की सीमा बताते ही पुण्य प्रारंभ हो जाता है। यह आपको सात्विक बनाने की कृति बनाई गई। अर्थ उपार्जन करना उतना महत्व नहीं रखता, जितना कि जीव विज्ञान मायने रखता है। वित्त से यदि चिपके रहोगे तो

चित्त ठीक नहीं रह सकता। तराजू का भारी पलड़ा सदैव नीचे जाता है। केवल पानी छानकर पीने से अहिंसा धर्म नहीं पलता। आपको यह भी देखना चाहिए कि कहीं आपका धन मुर्गी पालन, शराब ठेके, चमड़ा उद्योगों जैसे हिंसात्मक और अपवित्र कार्यों में, अनजाने में, बैंकों में जमा राशि द्वारा उपयोग तो नहीं हो रहा है। यदि आपका पैसा अहिंसात्मक कार्यों में लगेगा तो उससे अहिंसा देवता की रक्षा होगी, कषायों और संकलेश भावों से बैर भाव व संघर्ष भाव से भी रक्षा होगी। यह सब जन-जन के कल्याण का कार्य है इसमें श्रावकों के अलावा आर्यिकाओं, संतों, मुनियों और स्वयं आचार्यों को भी समझना होगा। अपने जीवन में पाप को कम करो और पुण्य को बढ़ाते जाओ तभी कल्याण संभव है।

बीनाबारह में खुलेगी विशाल जैन डेयरी

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज की पावन प्रेरणा से जैन तीर्थ बीनावारह में एक विशाल जैन डेयरी अहमदाबाद के आणंद में अमूल की तर्ज पर खोली जाएगी। इसका उद्देश्य आर्थिक न होकर अहिंसा प्रेमियों के लिए शुद्ध सात्विक दूध, घी आदि पदार्थों की उपलब्धता तथा निर्धन अर्थहीन कमजोर परिवारों को रोजगार प्रदान करना होगा। मीडिया प्रभारी सुनील वेजीटेरियन ने बताया कि बीनाबारह में इसका केंद्र बनाए जाने का मूलकारण अनेक बड़े शहरों, जबलपुर, सागर, दमोह, नरसिंहपुर, विदिशा, रायसेन आदि के मध्य में होने के साथ यहां जमीन और जल की उपलब्धता एक बड़ा कारण है। इसमें भागीदारी हेतु अनेक व्यक्तियों को इसमें सदस्य बनाया जाएगा तथा अनेक श्रावगण अपनी ओर से गायों का दान कर रहे हैं।

साभार - आचरण समाचार पत्र

त्याग के साथ गुरु-दर्शन

स्नान, दर्शन, पूजन, भोजन सम्पन्न हुआ। अजमेर की धरती पर विद्याधर, फिर गुरुवर के दर्शन करने चल पड़े मदनगंज-किशनगढ़ की ओर। प्रथम दर्शन यहीं हुए पूज्य मुनिवर श्री ज्ञानसागर जी के, वह भी कजौड़ीमल के साथ। विद्याधर के मानस में गुरु से पूर्व कजौड़ीमल जुड़ गए। एक गुरु, दूसरा गुरुभक्त। कजौड़ीमल जी ने श्री ज्ञानसागर जी से वह सब बतलाया जो विद्याधर चाहते थे। नजर भरकर देखा ज्ञानसागर जी ने विद्याधर की ओर। पूछ बैठे-क्या नाम है तुम्हारा? जी, विद्याधर हूँ...... तुम विद्याधर हो? मुस्कुराए..... फिर बोले, तो विद्या सीखकर उड़ जाओगे, विद्याधरों की तरह। फिर मैंश्रम क्यों करूँ? नहीं महाराज, नहीं। मैं उड़ने नहीं आया, मैं रमने आया हूँ। ज्ञानसागर जी की चरणरज में रमने। विश्वास करें, मैं ज्ञानार्जन कर भागूँगा नहीं। कुछ पल रुककर फिर बोले-विद्याधर मुनिवर से, यदि आपको मेरी बातों पर विश्वास नहीं है तो मैं शपथ लेता हूँ, आज से ही आजीवन सवारी का त्याग करता हूँ। जरा-सी बात में 'महान्-त्याग'।

साभार : यादें विद्याधर की

परिचय की दृष्टि में पच्चीस वर्ष की प्रभावना

(मुनिश्री आर्जवसागर जी महाराज की रजत दीक्षा जयन्ती के उपलक्ष्य में)

नाम	:	श्री पारसचन्द्र जैन
उपनाम	:	पप्पू
जन्म ग्राम	:	फुटेराकलाँ
तिथि	:	भाद्रपद शुक्लाष्टमी, 11.09.1967
जन्म समय	:	प्रातः 4 बजे
माता का नाम व विशेषता	:	श्रीमती माया देवी जैन, अणुव्रत धारी
पिता का नाम व विशेषताएँ	:	स्व. श्री शिखरचन्द जी जैन, प्रधान अध्यापक रहे। हिन्दी, इंग्लिश में अध्यापन व काव्य रचनाएँ, शास्त्र पठन पाठन और भजन, लेखन आदि में भी रुचि थी।

बचपन की घटनाएँ : (पारस के जीवन सम्बन्धी)

- खेल में गेंद, गिल्ली-डण्डा, फुटबॉल खेलना, काँच की गोलियाँ, कैरम, दौड़ लगाना, ऊपर से कूदना आदि।
- पढ़ने में भूगोल, सामाजिक शास्त्र, चित्रांकन में रुचि थी।
- मेला, मुनिसंघदर्शन, क्षेत्र दर्शन, धार्मिक नाटक, राम लीला, तीर्थंकर की आरती, प्रतियोगिता में भी रुचि थी।
- बचपन से ही बड़े बाबा कुण्डलपुर के साक्षात् दर्शन होते रहे और आचार्य श्री विद्यासागर जी का प्रथम दर्शन, जो पथरिया (दमोह) नगर के 'बांझल सदन' में किया था, ये दोनों अविस्मरणीय बातें हैं।
- लौकिक शिक्षा के गुरुः- पुराण जी मास्टर साहब (ब्राह्मण शिक्षक), मनोहर सोनी, शिखरचन्द जी बांसा वाले, राजोरिया मास्टर साहब आदि।

स्कूल की घटनाएँ :-

- 5 वर्ष की उम्र में धार्मिक पाठशाला में जाना, स्कूल समय के पूर्व पहुँचना, झगड़ा नहीं करना, बिना पूछे किसी की वस्तु नहीं लेना, शिक्षकों की आज्ञा का परिपूर्ण ध्यान देना, पिकनिक में आपस में मदद करना, दुःखी, दरिद्री लोगों या गरीब मित्रों की सहायता करना, सोलह वर्ष

की उम्र में संगीत पार्टी में रुचि, मंजीरा आदि के साथ आरती प्रतियोगिता में रुचि लेना।

- राजेश (रज्जन) जैन, सुभाष, संजय, विजय, पदम, रवीन्द्र, कमल आदि मित्र थे।
- रात्रि भोजन, जमीकन्द, सप्त व्यसन, धूम्रपान, फालतू घूमना, धोखा देना, बातें बनाना, अनावश्यक वार्तालाप, गन्दी फिल्म देखना आदि ये सब बातें पारस को ना पसंद थी।

लौकिक शिक्षा :- बी.ए. (प्रथम वर्ष)

भाई , बहन परिचय :- सबसे बड़े भाई तो श्री पारसचंद्र ही थे। उसके बाद छोटे भाई श्री संजय कुमार जैन (M.A., Ll.B. Ph.D.) तथा इनसे छोटे भाई श्री अरविन्द जैन (M.A.)। इनसे छोटी बहिन श्री संध्या जैन।

वैराग्य का कारण :- चतुर्गति दुःख, भव भ्रमण का चिंतन।

वैराग्य का प्रारंभ :- पुराण, छहढाला, वर्णी जीवन गाथा, चारित्र चक्रवर्ती आदि ग्रन्थों के ज्ञान से संसार की असारता का चिंतवन।

ब्रह्मचर्य व्रत :- आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत 9.12.1984 अतिशय क्षेत्र, पनागर में लिया और साथ ही आजीवन के लिए नमक का त्याग भी कर दिया था।

सातवी प्रतिमा के व्रत :- सन् 1985 में सिद्धक्षेत्र अहारजी में लिये थे ।

दीक्षा के समय परिवार वालों का चिंतन :- दीक्षा को जाते समय परिवार के सदस्यों ने विरोध (इन्कार) ही किया था। वे यह कहते थे कि मोक्षमार्ग बहुत कठिन है इस पर चलना सबको आसान नहीं है। तुम मेरे पहले बेटे हो इसलिए हमसे मोह नहीं छूटेगा। सब बातों का अनुभव करना फिर चले जाना। सत्रह वर्ष में कैसे परिषह सहन करोगे ऐसा कहते थे और तीन, चार बार पकड़कर घर ले गये थे। फिर भी इनका मन परिवर्तन नहीं हुआ। खूब त्याग करने लगे। एक बार आचार्य श्री ने ही घरवालों से कह दिया कि इसका तो पूर्व भव का संस्कार है जो मोक्षमार्ग में जाना चाहता है। इसको आगे बढ़ने दो। आप लोग बाधक मत बनो ऐसा कहा तब घर वालों ने पारस को छोड़ा और पिता श्री ने कविता रूप में यह उपदेश दिया था कि-

जाते हो लाल जाओ, पर इतना ध्यान रखना ।
जिस पथ पर कदम रखा, आगे बढ़ते जाना ।।

1. चंदन के पलने में, मखमल पर सोये थे।
कंकर गड़ जाये तो, मखमल न याद करना ।। (जाते ....)

2. माता की लोरी सुन, पलकें झपकी होगीं ।
कभी याद आये उनकी, जिनवर लोरी सुनना ।। (जाते ....)

3. वैराग्य का पथ दुर्गम, परिषह के पर्वत हैं ।
धीरे-धीरे बढ़ना, समता से काम लेना ।। (जाते ....)

क्षुल्लक दीक्षा :-8.11.85 को सिद्धक्षेत्र आहारजी में क्षुल्लक दीक्षा हुयी थी । क्षुल्लक दीक्षा के समय प्रमाणसागरजी आदि 9 लोगों की एक साथ दीक्षा हुयी थी। आर्जवसागर जी ने क्षुल्लक अवस्था से आजीवन शक्कर, खोवा, काजू, बादाम आदि त्याग कर दिया।

ऐलक दीक्षा :- 10.07.1987 को अतिशय क्षेत्र थूबौनजी में प्रमाणसागर जी आदि के साथ ऐलक दीक्षा हुयी थी।

मुनि दीक्षा व दीक्षा साथी :- 31.03.1988 सिद्धक्षेत्र सोनागिरि जी में महावीर जयन्ती के सुअवसर पर मुनि दीक्षा हुयी थी। मुनि दीक्षा के समय प्रमाणसागर जी, आर्जवसागर जी आदि आठ दीक्षायें हुयी थी। 1. मुनि श्री प्रमाणसागर जी, 2. मुनिश्री आर्जवसागर जी, 3. मुनिश्री मार्दवसागर जी, 4. मुनिश्री पवित्रसागर जी, 5. मुनिश्री उत्तमसागर जी, 6. मुनिश्री चिन्मयसागर जी, 7. मुनिश्री पावनसागर जी, 8. मुनिश्री सुखसागर जी।

दीक्षा समय के भाव :- दीक्षा के समय आध्यात्मिक भाव थे। लोक व्यवहार से बचते हुए आत्म साधना करना, गुरु परम्परा से चलते हुए मौन साधना में अधिक समय देते हुए आगम ग्रंथों का अध्ययन, अध्यापन, लेखन, काव्य शैली में आगम ग्रंथों की प्रस्तुति करना और प्रभावना के लिए विभिन्न प्रदेशों में धर्म क्षेत्रों के दर्शनार्थ गुरु आशीर्वाद से वन्दना, पद यात्रा सफल हो और विभिन्न प्रदेशों के भव्यों का अनुग्रह हो सबको सम्यग्दर्शन पूर्वक षोडशभावनाओं का संस्कार हो। रूढ़िवाद से दूर हों। ऐसी मंगल भावना मुनिश्री के मन में जागृत हुई थी।

दीक्षा समय का नियम :- महावीर जयन्ती (1988) से अगली महावीर जयन्ती (1989) तक एक वर्ष के लिए मौन व्रत धारण कर लिया था।

आचार्य श्री के साथ संघ में ग्रन्थों का अध्ययन :- रत्नकरण्डक श्रावकाचार, तत्त्वार्थ सूत्र, इष्टोपदेश, आत्मानुशासन, बृहद् द्रव्यसंग्रह, स्वामी कार्तिकेयानुप्रेक्षा, दश भक्ति संग्रह, बृहद् स्वयंभू स्तोत्र, कातन्त्र रूप माला, प्रमेय रत्नमाला, न्याय दीपिका, सर्वार्थसिद्धि, गोम्मटसार, अष्टपाहुड़, मूलाचार, मूलाचार प्रदीप, प्रवचनसार, समयसार, बारसाणुवेक्खा, पंचास्तिकाय, ज्ञानार्णव, समाधितन्त्र, धवला, जयधवला (षटखण्डागम व कषाय पाहुड़), मूकमाटी और पुराणों में उत्तर पुराण, हरिवंश

पुराण, पद्म पुराण आदि शास्त्रों का अध्ययन हुआ और स्वाध्याय में अभीक्षण रूप से विशेष रुचि बनी थी। सन् 1984 से सन् 1990 तक आचार्य श्री के साथ गुरु चरणों में रहकर आचार्य श्री के मार्ग दर्शन में धर्म कार्य किया और वैय्यावृत्य करने में अधिक रुचि थी।

मुनिश्री आर्जवसागर जी के मुनि जीवन की विशिष्ट घटनायें :- मुनि जीवन में महाराष्ट्र, कर्नाटक (श्रवणबेलगोला) से जब तमिलनाडु तरफ विहार हुआ तब अनेक कठिन परिषह भी सहन करते थे। तमिलनाडु में तो जैनों की संख्या कम है। केवल करीब 108 गाँवों में जैन हैं। बहुत सालों के बाद निर्ग्रन्थ गुरु महाराजजी आर्जवसागर जी पधारे थे। जब मद्रास तरफ विहार किया तब कुछ अन्य जाति के लोग महाराजजी के सामने तलवार लेकर भी आये। गुरु महाराज जी के पुण्य उदय से वह उपसर्ग टल गया और भी कई जो परिषह व उपसर्ग हुए वे सब समतापूर्वक सहन करते थे। और वहाँ के खान-पान को (चावल के आहार को) आदत में लाये थे। कभी गेहूँ छोड़ दिये कभी घी छोड़ दिया ऐसे सब सहन करके एक अपूर्व धर्म प्रभावना की थी। यह कहना भी अकथनीय है। वहाँ पर गुरुवर श्रीआर्जवसागर जी से 20 प्रतिमाधारी बने थे। कर्नाटक के दो भैय्या जी जिन्होंने गुरुवर आर्जवसागर जी महाराज जी से व्रत, प्रतिमा ली थी फिर आचार्य श्री के पास मुनि दीक्षा प्राप्त कर ली है। तमिलनाडु की दो बहिनें जिन्होंने ब्रह्मचर्य व्रत और प्रतिमा के व्रत गुरुवर श्री आर्जवसागर जी से लिये थे फिर आचार्य श्री से आर्यिका दीक्षा प्राप्त कर ली। मुनिश्री ने अभी तक अनेक (करीब एक शतक) पाठशालायें खोलकर नई पीढ़ी को एक नई दिशा दी है और मोक्षमार्ग में आकर अपने सान्निध्य में 23 पंचकल्याणक, 21 बड़े विधान और अनेक वेदी प्रतिष्ठायें भी करवायीं है।

पञ्चकल्याणक के स्थान :- (अपने गुरुदेव आचार्य श्री के साथ) 1. शाहपुरा (गजरथ) 2. गंजबासौदा (गजरथ) 3. केसली (गजरथ) 4. नैनागिरि (गजरथ) 5. गोटेगाँव (गजरथ) 6. सिरोंज (गजरथ) 7. नरसिंहपुर (गजरथ) 8. मुक्तागिरि में लघु पंच कल्याणक। आचार्य श्री वर्धमान सागर जी के साथ 9. श्रवणबेलगोला में तथा स्वतंत्र रूप से तमिलनाडु में 10. चैय्यार, 11. एरंबूर, 12. पौन्नूरमलै 13. नल्लवन पालैयम्, 14. आरनी (पुदुकामूर), 15. मोटूर और 16. वेलूर में, (नियमसागर जी के साथ) 17. सदलगा में, फिर स्वतंत्र रूप से, 18. भोपाल एशबाग में (गजरथ), 19. भोपाल (अशोकागार्डन गजरथ), 20. सम्मेदशिखर जी (उ.प्र. प्रकाश भवन), 21. दमोह (सिविल वार्ड) (गजरथ), 22. जयपुर (पॉपलियान मन्दिर) 23. दांतारामगढ़ (सीकर)।

महामण्डल विधान (कम से कम 5 दिन वाले और अधिक से अधिक 13 दिन वाले) आचार्य श्री के साथ 1. शाहपुर (सि. चक्र), 2. नैनागिरि (सि. चक्र) स्वतंत्र रूप से, 3. कारंजा (सि. चक्र), 4. पोन्नूरमलै (कल्पद्रुम वि.) 5. पोन्नूरमलै तपोनिलय (सि. चक्र), 6. पारोला

(सि. चक्र), 7. इन्दौर (पलासिया) (कल्पद्रुम), 8. भोपाल (पंचशील नगर) (समवसरण वि.), 9. भोपाल (शंकराचार्य नगर) (सि. चक्र), 10. अशोक नगर (इंद्रध्वज वि.), 11. राँची (समवसरण वि.), 12. राँची (सि. चक्र), 13. दमोह (इन्द्रध्वज वि.), 14. छतरपुर (नन्दीश्वरद्वीप वि.), 15. ग्वालियर (कल्पद्रुम वि.), 16. विजय नगर ग्वालियर (सिद्धचक्र वि.), 17. अलवर (सिद्धचक्र वि.), 18. जयपुर (कीर्ति नगर) (समवसरण वि.), 19. जयपुर (मालवीय नगर) (सिद्धचक्र वि.), 20. राणोली सीकर (नंदीश्वर वि.), 21. रामगंजमंडी (समवसरण वि.)।

मुनि जीवन में विहार :- मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, महाराष्ट्र, कर्नाटक, तमिलनाडु, पाण्डीचेरी, बिहार, बंगाल, झारखण्ड, राजस्थान, हरियाणा, दिल्ली और गुजरात इन तेरह प्रदेशों मेंअभी तक विहार करके वहाँ के प्रमुख अतिशय व सिद्ध क्षेत्रों के दर्शन किये तथा वहाँ हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत, मराठी, कन्नड़, तमिल और प्राकृत आदि भाषाओं के साथ धर्म की प्रभावना रूप ध्वजा को और गुरु संदेश को सच्चे आचरण के साथ जन-जन तक फहराया है।

श्रावक साधना संस्कार शिविर :- ऐसे शिविर में भव्य आयोजन पर्यूषण पर्व में सन् 1994 से लेकर 2011 तक 18 वर्ष लगातार सम्पन्न कराये।

धार्मिक अहिंसा सम्मेलन :- 1991 में कोपरगाँव (महाराष्ट्र), 1993 में आलंद (गुलवर्ग-कनार्टक), 1993 में श्रवणबेलगोला (कनार्टक), 2001 में तिरुवन्नामलई (तमिलनाडू), 2003 में कोपरगाँव (महाराष्ट्र), 2004 में भोपाल (मध्यप्रदेश), 2007 में दमोह (मध्यप्रदेश), 2011 में दाँतारामगढ़ (सीकर, राजस्थान), 2011 रामगंजमण्डी (कोटा, राजस्थान)।

अखिल भारतीय विद्वत् संगोष्ठी :- सन् 2006 राँची में ''काल परिवर्तन व काल परिवर्तन में निमित्त ज्योतिष्क विमान'' के विषय पर सम्पन्न हुयी और सन् 2010-जयपुर में जैन सिद्धान्त विषय पर सम्पन्न हुयी।

डाक्टर्स सम्मेलन :- सन् 1991-कोपरगाँव में अहिंसा के विषय पर, सन् 2007-दमोह में शाकाहार विषय पर, सन् 2008 ग्वालियर में चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में अहिंसक आहार विषय पर, सन् 2009-अजमेर में जीवन में अहिंसा व शाकाहार का महत्व विषय पर और सन् 2011-रामगंजमंडी में अहिंसक आहार और ध्यान विषय पर सम्पन्न हुई।

मुनिश्री की कृतियाँ, उनकी रचना का भाव एवं विशेषताएँ :- **जैनागम संस्कार** - सन् 1994 में कर्नाटक के दावणगेरे नगर में श्रावकों ने जो महाराज जी के पास शंका समाधान शुरु किया था उसी का संकलन करके और कुछ आवश्यक विषय बढ़ाकर श्रावक साधना संस्कार शिविर आदि के निमित्त

हिन्दी भाषा में ''जैनागम संस्कार'' ग्रन्थ की रचना हुई थी। विहार में भी लेखन चलता रहा और तमिलनाडु में पूरा हो गया।

तमिल में भी अनुवाद हुआ और सन् 1995 में प्रथम तमिल भाषा में ही प्रकाशन हुआ। फिर हिन्दी में सन् 2004 भोपाल में प्रकाशन हुआ और कन्नड़ भाषा में 2007 में प्रकाशन हुआ। मराठी भाषा में भी अनुवाद हो चुका है अब प्रकाशन होगा। इस ग्रन्थ में पूरे जैन धर्म को इक्कीस अध्यायों में सुंदर और सरल रूप में संस्कारित किया गया है। जिसको पढ़ने वालों का मन आह्लादित होते हुए स्वाध्याय के प्रति उनकी बुद्धि आगम में रुचि पूर्वक उत्सुकता को प्राप्त कराती है। **तीर्थोदय काव्य** - सन् 1997 में कन्नलम् चातुर्मास के षोडसकारण के सुअवसर पर मुनिश्री का एक आहार एक उपवास करने का मानस बना और उसकी विशुद्धि के निमित्त पौने दस से पौने बारह बजे तक का समय उपवास के दिन जो रिक्त रहता था उसकी पूर्ति षोडसकारण भावनाओं के ऊपर काव्य रचना के रूप में हुई। क्रमशः प्रतिदिन दस, बीस तक ज्ञानोदय छन्द पद्यों की रचना करते चले गए और श्रावकों को प्रतिदिन सुनाते भी चले गए। ऐसे षोडसकारण पर्व में उपवास की विशुद्धि का परिपाक तीर्थोदय काव्य के रूप में हो गया। प्रथम षोडसकारण पर्व के उपवासों में कन्नलम् ग्राम के जिनालय के समीप स्थित पर्वत की ज्ञानातिशय गुफा में इस काव्य की रचना की शुरूआत हुई और दूसरे वर्ष पौन्नूरमलै विशाखाचार्य तपोगिरि के तपोनिलय में पुनः षोडसकारण व्रत के उपवासों में या प्रारंभ में ही आहार में अन्तराय भी आ जाने पर तीन-तीन उपवास जैसे अवसर में इस काव्य की सप्त शतक (700) पद्यों के रूप में सम्पूर्णता हो गई। इस काव्य की रचना का मुख्य ध्येय मिथ्यात्व रूपी रूढ़िवाद का खण्डन और बारह व्रतों का निरतिचार पालन तथा मुनियों के षड् आवश्यक आदि मूलगुणों का त्याग, तप, समाधि आदि के साथ भगवान् के पंच कल्याणक, समवशरण रचना, मार्ग प्रभावना आदि विषयों को षोडसकारण के सूत्रों में पिरोने का रहा है। इस तीर्थोदय काव्य में करीब 200 पद्यों में सम्यग्दर्शन का वर्णन है। इस काव्य में लगभग सम्यग्दर्शन के सम्पूर्ण वर्णन का संग्रह या सार है जो अन्यत्र एक ही ग्रन्थ में उपलब्ध नहीं होता। विनय सम्पन्नता में मूलाचार के अनुसार पाँच प्रकार की विनय दर्शाई है। शीलव्रतेष्वनतिचार भावना में सम्पूर्ण व्रतों का अतिचारों के वर्णन सहित एवं प्रतिमाओं का भी समग्र वर्णन, श्रावकाचार के रूप में वर्णित किया गया है। शक्तितस् त्याग भावना में बारह भावानायें वर्णित की हैं। शक्तितस् तप भावना में बाईस परिषहों की सहनशीलता दर्शायी है। साधुसमाधि और वैय्यावृत्यकरण भावनाओं में साधुओं की सल्लेखना का सुन्दर वर्णन है। अर्हत् भक्ति भावना के करीब सत्तर पद्यों में पंच कल्याणक, समवसरण की अष्ट भूमियों का वर्णन साक्षात् साक्षर दर्शन की तरह किया है। आवश्यकापरिहाणी और आचार्य भक्ति भावनाओं में मुनियों के अट्ठाईस मूलगुणों के गुण को गाया गया है। बाकी अन्य भावनाओं के वर्णन में अनेक शास्त्रों

की परिभाषाओं के सुलक्षणों से लक्षित किया गया है। साथ ही साथ एक-एक भावनाओं के अन्तिम मंगल रूप से सरलीकृत मुरजबंध बनाकर षोडस ही भावनाओं को गागर में सागर की तरह पूरित किया है। जिस वजह से काव्य की सुन्दरता हार में मोती की तरह वृद्धिगत होकर भव्यों के कल्याणार्थ एक अतिशयकारी बन गई है। जो भी भव्य इसका पठन करता है वह सम्यग्दर्शन की विशुद्धि को अवश्य पाता है और एक बार ही पढ़कर नहीं अघाता बल्कि मुहू-र्मुहूर (पुनः पुनः) अपने जीवन में उतारने की अवश्य सुचेष्टा करता है। ऐसी भावना की महिमा इतनी अतिशयकारी है तो साधना कैसी होगी? यह लिखने, बोलने की बात नहीं यह तो अनुभव की बात है। सन् 1991 में कोपरगाँव चातुर्मास के दशलक्षण पर्व पर **'धर्मभावना-शतक'** लिखी थी। सन् 2004 में भोपाल चातुर्मास के अंतर्गत प्रवचनों में कुछ प्रवचनों का संग्रह रूप में **'परमार्थ साधना'** बनी। पारोला के प्रवचन से **'बचपन का संस्कार'** पुस्तक बनी। सन् 2005 में अशोक नगर के चातुर्मास में दशलक्षण पर्व में जो प्रवचन हुए उसकी **'पर्यूषण पियूष'** नाम से कृति बनी। सन् 2006 में राँची चातुर्मास के समय कर्म के मर्म को समझाने वाली **'जैन धर्म में कर्म व्यवस्था'** पुस्तक बनाई। सन् 2007 में ग्रीष्मकालीन के समय बच्चों और बड़ों का शिविर सतना नगरी में हुआ था तब **'वारसाणुवेक्खा एवं इष्टोपदेश'** का अनुवाद किया। सन् 2008 के चातुर्मास ग्वालियर नगर में हुआ था, वहीं पर **'सम्यक् ध्यान शतक'** 113 दोहा-पद्यों में बहुत सुन्दर और ध्यान से कर्म निर्जरा हेतु उपयोगी एक अनुपम कृति बनी। और धार्मिक पाठशालाओं के निमित्त **'नेकजीवन'** कृति बनाई गयी थी। जिसमें मन्दिर की विधि, शिष्टाचार तथा नियमावली और मर्यादा को लेकर विषय प्रस्तुत किया।

मुनिश्री आर्जवसागर जी महाराज के सन् 2012 में अलवर नगरी में और 2006 में रांची में जो न्यूज पेपर में प्रवचन प्रकाशित हुए थे उनका संकलन करके **'आर्जव-वाणी'** नाम की कृति बनाई गई है और गुरुवर की कविताओं का संकलन **'आर्जव-कविताएँ'** के रूप में हिन्दी में हुआ। गुरुवर ने तमिलनाडु के प्रवास पर तमिल भाषा में भी करीब 30 कविताएँ बनायी थीं वे भी **'आर्जव कविताएँ'** के नाम से तमिल भाषा में प्रकाशित हुई हैं। इसी तरह मुनिश्री ने तमिल में **'चौबीस ठाणा'** शास्त्र का भी अनुवाद किया था जिसके प्रकाशन के बाद लोग उसे चाव से पढ़ते हैं। सन् 1997 के कन्नलम् वर्षायोग में हुए दशलक्षण धर्म के प्रवचनों का सार तमिल में **'मोक्ष तरुं दस धर्मं'** कृति भी प्रकाशित हुई है। ऐसी असीम कृपा कर गुरुवर जन-जन कल्याण हेतु अपनी तपस्या का समय निकालकर भव्यों के कल्याणार्थ साहित्य का सृजन करते हैं जिनके इस अनन्त उपकार को हम कभी भुला नहीं सकते।

प्रस्तुति : डॉ. अजित जैन एवं डॉ. सुधीर जैन

महावीराचार्यप्रणीतः

गणितसारसंग्रहः

गतांक से आगे .... अनुवादक : प्रो. एल.सी. जैन

सप्ताशीतित्रिशतसहितं षट्सहस्रं पुनश्च पञ्चत्रिंशच्छतसमधिकं सप्तनिघ्नं सहस्रम् ।
द्वाविंशत्या युतदशशतं[1] वर्गितं तत्रयाणां ब्रूहि त्वं मे गणकगुणवन्संगुणय्य प्रमाणम् ।।३५।।

इति परिकर्मविधौ तृतीयो वर्गः समाप्तः ।

वर्गमूलम्

चतुर्थे वर्गमूलपरिकर्मणि करणसूत्रं यथा—

अन्त्यौजादपहृतकृतिमूलेन द्विगुणितेन युग्महृतौ । लब्धकृतिस्त्याज्यौजे द्विगुणदलं वर्गमूलफलम् ।।३६।।

१ P, K और B राशिरेतत्कृतीनाम् ।

६३८७ और तब ७१३५ और तब १०२२, इनमें से प्रत्येक संख्या का वर्ग किया जाता है । हे कुशल गणितज्ञ ! अच्छी तरह गणना करने के पश्चात् मुझे बतलाओ कि इन तीनों के वर्ग क्या होंगे ? ।।३५।।

इस तरह, परिकर्म व्यवहार में, वर्ग नामक परिच्छेद समाप्त हुआ ।

वर्गमूल

परिकर्म क्रियाओं में वर्गमूल नामक चतुर्थ क्रिया के सम्बन्ध में निम्नलिखित नियम हैं—

अंकों द्वारा प्रदर्शित संख्या की इकाई के स्थान से बाईं ओर के अन्तिम अयुग्म (विषम) अंक में से बड़ी से बड़ी वर्ग संख्या (अंक) घटाई जाती है; तब इस वर्ग की हुई संख्या को द्विगुणित कर प्राप्त फल द्वारा, शेष संख्या के साथ दाहिने युग्मस्थान की संख्या उतार कर रखने के पश्चात् प्राप्त हुई संख्या में भाग देते हैं । और तब, इस तरह प्राप्त भजनफल का वर्ग, शेष संख्या के साथ दाहिने अयुग्म स्थान की संख्या उतार कर रखने के पश्चात् प्राप्त हुई संख्या में से घटा देते हैं । तब, प्रथम वर्गसंख्या का वर्गमूल और द्वितीय वर्गसंख्या का वर्गमूल, (एक के बाद दूसरी) दाहिनी ओर रखने से प्राप्त संख्या को द्विगुणित कर शेष संख्या के नीचे उतारी हुई संख्या रखकर प्राप्त संख्या में भाग देते हैं; और फिर शेष संख्या के साथ उतारी हुई संख्या रखकर प्राप्त संख्या में से सबसे बड़ी वर्गसंख्या घटाते हैं । इस प्रकार, यह क्रिया अंत तक की जाती है और अंतिम द्विगुणित भाजक संख्या की अर्द्ध संख्या, परिणामी वर्गमूल होता है ॥३६॥

(३५) यहाँ ७१३५ को १३५ + (१००० × ७) द्वारा दर्शाया गया है ।

(३६) इस नियम को स्पष्ट करने हेतु निम्नलिखित उदाहरण नीचे साधित किया जाता है ।

६५५३६ का वर्गमूल निकालना—६।५५।३६

```
                 २² = ४
                 ------
२ × २ = ४     )  २५  ( ५
                 २०
                 ------
                 ५५
              ५² = २५
                 ------
२५ × २ = ५०   )  ३०३ ( ६
                 ३००
                 ------
                 ३६
              ६² = ३६
२५६ × २ = ५१२ )  ०   ( ०
                 ०
                 ------
                 ×
```

∴ वर्गमूल = $\frac{५१२}{२}$ = २५६ ।

अत्रोद्देशकः

ऐकादिनवान्तानां वर्गगतानां वदाशु मे मूलम् । ऋतुविषयलोचनानां द्रव्यमहीध्रेन्द्रियाणां च ॥३७॥
एकाग्रषष्टिसमधिकपञ्चशतोपेतषट्सहस्राणाम् । षड्वर्गपञ्चपञ्चकषण्णामपि मूलमाकलय ॥३८॥
द्रव्यपदार्थनयाचललेख्यालब्ध्यब्धिनिधिनयाब्धीनाम् ।
शशिनेत्रेन्द्रिययुगनयजीवानां चापि किं मूलम् ॥३९॥
चन्द्राब्धिगतिकषायद्रव्यर्तुहुताशनर्तुराशीनाम् ।
विधुलेख्येन्द्रियहिमकरमुनिगिरिशशिनां च मूलं किम् ॥४०॥
द्वादशशतस्य मूलं षण्णवतियुतस्य कथय संचिन्त्य । शतषट्कस्यापि सखे पञ्चकवर्गेण युक्तस्य ॥४१॥
अङ्केभकर्माम्बरशंकराणां सोमाक्षिवैश्वानरभास्कराणाम् ।
चन्द्रर्तुबाणाब्धिगतिद्विपानामाचक्ष्व मूलं गणकाग्रणीस्त्वम् ॥४२॥

इति परिकर्मविधौ चतुर्थं वर्गमूलं समाप्तम् ॥

घनः

पञ्चमे घनपरिकर्मणि करणसूत्रं यथा—

त्रिसमाहतिर्घनः स्यादिष्टोनयुतान्यराशिघातो वा । अल्पगुणितेष्टकृत्या कलितो वृन्देन चेष्टस्य ॥४३॥
इष्टादिद्विगुणेष्टप्रचयेष्टपदान्वयोऽथ वेष्टकृतिः । व्येकेष्टहतैकादिद्विचयेष्टपदैक्ययुक्ता वा ॥४४॥

१ P और M वर्गगतानां शीघ्रं रूपादिनवावसानराशिनाम् । मूलं कथय सखे त्वं० । २ M नव ।

उदाहरणार्थ प्रश्न

हे मित्र ! मुझे शीघ्र बतलाओ कि १ से लेकर ९ तक की वर्गसंख्याओं, तथा २५६ और ५७६ के वर्गमूल क्या हैं ? ॥३७॥ ६५६१ और ६५५३६ के वर्गमूल निकालो ॥३८॥ ४२९४९६७२९६ और ६२२५२१ के वर्गमूल क्या हैं ? ॥३९॥ ६३६६४४४१ और १७७१५६१ के वर्गमूल क्या हैं ? ॥४०॥
हे मित्र ! भलीभाँति सोचकर मुझे बतलाओ कि १२९६ और ६२५ के वर्गमूल क्या हैं ? ॥४१॥ हे गणितज्ञों में अग्रणी ! ११०८८९, १२३२१ और ८४४५६१ के वर्गमूल बताओ ? ॥४२॥

इस प्रकार, परिकर्म व्यवहार में, वर्गमूल नामक परिच्छेद समाप्त हुआ ।

घन

परिकर्म क्रियाओं में, पञ्चम घन नामक क्रिया का नियम निम्नलिखित है—

कोई तीन बराबर राशियों का गुणनफल उस दत्त राशि का घन होता है । अथवा, कोई दी हुई राशि का, किसी चुनी हुई राशि को दत्त राशि में जोड़ने से प्राप्त फल का तथा चुनी हुई राशि को दत्त राशि में से घटाने से प्राप्त फल का गुणनफल प्राप्त करते हैं । इसमें, चुनी हुई राशि के वर्ग को दत्त राशि में से चुनी हुई राशि को घटाने से प्राप्त फल से गुणित करने पर प्राप्त गुणनफल और चुनी हुई राशि का घन जोड़ने पर भी दत्त राशि का घन प्राप्त होता है ॥४३॥

अथवा, जिसका प्रथम पद दी गई राशि है तथा प्रचय दी गई राशिका दुगुना है और जिसके पदों की संख्या दी हुई राशि के बराबर है, ऐसी समान्तर श्रेढि का योग दी हुई राशि के घन को उत्पन्न करता है । अथवा, जिस राशि का घन प्राप्त करना है उसके वर्ग में, दी गई राशि में से एक घटाकर प्राप्त राशि तथा दी गई राशि के बराबर जिसके पदों की संख्या है (और जिसका प्रथम पद एक है और प्रचय दो है) ऐसी समान्तर श्रेढि के योग का गुणनफल मिलाकर उस दी हुई राशि का घन प्राप्त करते हैं ॥४४॥

(४३) प्रतीक रूप से यह नियम (निरूपित करने पर) इस तरह साधित होता है:—

(i) $अ \times अ \times अ \times = अ^3$ (ii) $अ (अ + ब)(अ - ब) + ब^2 (अ - ब) + ब^3 = अ^3$

(४४) बीजगणित से नियम का अर्थ : (i) $अ^3 = अ + ३अ + ५अ + ७अ + \cdots$ अ पदों तक ।

(ii) $अ^3 = अ^2 + (अ - १)(१ + ३ + ५ + ७ + \cdots$ अ पदों तक)

क्रमशः ....

भगवान महावीर स्वामी जयंती के पावन अवसर पर

प्रातः स्मरणीय तथा अध्यात्म सरोवर के परमहंस परमपूज्य संत शिरोमणि आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज के धर्मप्रभावक परम शिष्य मुनिश्री आर्जवसागर जी महाराज के पच्चीसवें दीक्षा दिवस (4 अप्रैल) के उपलक्ष्य पर प्रस्तुत आलेख

डॉ. अजित कुमार जैन

ग्राम फुटेरा कलाँ, जिला दमोह (म.प्र.) में 11 सितंबर 1967 को जन्में बालक पारसचन्द जैन ने जब मुनिदीक्षा धारणकर अपने जीवन को सचमुच पारस मणि बना लिया तो सारा भारत उन्हें पूजने लगा। वह जन्म भूमि भी धन्य हो गई। मुनिश्री ने उन भूले-भटके मानवों को पारस पत्थर जैसा स्पर्श करके चमका दिया जो मिथ्यात्व रूपी जंग से अपनी चमक-दमक खो बैठे थे। गृहस्थ जीवन में यह बालक अपने माता-पिता के धार्मिक संस्कारों से ओत-प्रोत होकर प्रतिदिन जिन मन्दिर जाकर दैनिक पूजन और स्वाध्याय में मन लगाता था तथा संयमित जीवन बिताता था। जैसा कहा जाता है कि ''होनहार बिरवानके होत चीकने पात'' के अनुरूप यह कहावत तब चरितार्थ हो गई जब उनके द्वारा 17 वर्ष की अल्पायु में सन् 1984 में अतिशय क्षेत्र पनागर (जबलपुर) में आकर आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी के समक्ष ब्रह्मचर्य व्रत धारण किया गया और पिता श्री शिखरचंद जी के राजदुलारे माता मायादेवी के आंखों के तारे पारसचंद जैन का नाम पूरे मध्यप्रदेश में प्रसिद्ध हो गया। उनकी अभिरुचि वैराग्य की ओर क्रमशः बढ़ती गई और संसार, शरीर और भोगों के प्रति उदासीनता उन्हें संयम के शिखर पर बढ़ाती गई। आपने परम पूज्य आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज से श्री सिद्ध क्षेत्र अहार जी में 1985 में क्षुल्लक दीक्षा, अतिशय क्षेत्र थुबोन जी में 1987 में ऐलक दीक्षा तथा श्री सिद्धक्षेत्र सोनागिरजी में 31 मार्च 1988 को मुनि दीक्षा लेकर पारस नाम को धन्य बना लिया। परम पूज्य मुनि श्री आर्जवसागर जी महाराज मध्यप्रदेश से विहार करते हुए दक्षिण भारत के तामिलनाडु, कर्नाटक और महाराष्ट्र में लगभग 13 वर्षों तक अपूर्व एवं उल्लेखनीय धर्म प्रभावना करते रहे। उत्तर भारत से दक्षिण भारत की ओर विहार करते हुए मुनि श्री ने जहां-जहां वर्षायोग किया, वहां-वहां लोगों को आध्यामिकता का खूब भोजन खिलाया, ज्ञान की गंगा बहाई तथा बच्चों, युवकों, स्त्रियों, बुजुर्गों को धर्म संस्कार देते हुए उनको धर्म चिन्तन करने की प्रेरणा दी। अनेक प्रांतों में उन्होंने धर्म की अलख जगाई जिससे जगह-जगह पर जिन मन्दिरों के निर्माण हुए, पंचकल्याणक हुए एवं त्यागी व्रतीयों हेतु आश्रम खुले। बच्चों की धर्म संस्कारों में रुचित बढ़ाने हेतु पाठशालाएं खुलवाई। पूजन प्रशिक्षण तथा श्रावक संस्कार शिविर लगाकर समाज के पथ भ्रमित लोगों को नैतिकता एवं जिन धर्म पर लगाया। लोगों के चारित्र को सुधारा। उनकी प्रेरणा से लोगों

में धर्म के प्रति अभिरुचि उत्पन्न हुई, लोगों ने अणुव्रतादिक ग्रहण किए। जो लोग मुनिश्री के चरण कमल में पधारकर धर्म की शरण में आये उन्होंने अपने संदेहों का मुनिश्री से परिहार पाया। मुनि श्री की सौम्यता और मृदु मुस्कान न केवल उनके व्यक्तितत्व को प्रकट करती है वरन् उससे धर्म प्रभावना भी द्विगुणित होती है। आपके प्रवचनों से बाल-वृद्ध सभी प्रभावित होते हैं। सरल-सुबोध भाषा, काव्य से ओत-प्रोत प्रवचन, मीठी वाणी, मधुर मुस्कान, चेहरे पर तपस्या का ओजस्वी तेज दर्शनार्थियों के मन को मुग्ध कर लेता है। आपने तमिल, कन्नड़, मराठी, संस्कृत, प्राकृत, आंग्लभाषा का अध्ययन किया जिससे प्रान्तीय भाषा में प्रवचन होने से सभी लाभान्वित होते हैं। मुनि श्री द्वारा रचित कृतियों में से जैनागम संस्कार, तीर्थोदय काव्य, सम्यक् ध्यान शतक, परमार्थ साधना, नेक-जीवन, बचपन का संस्कार, पर्यूषण पीयूष, जैनधर्म में कर्म व्यवस्था, वारसाणुवेक्खा, इष्टोपदेश, धर्मभावना शतक तथा गोम्मटेश थुदि का प्रकाशन जैन श्रावक गणों तथा जैन धर्म अनुरागी बंधुओं के धार्मिक संस्कारों को आचरण में ढालने हेतु अमूल्य स्वरूप सिद्ध हुआ है। कुछ कृतियों का तमिल तथा कन्नड़ भाषा में अनुवाद हो चुका है जो कि अहिन्दी भाषी राज्यों में अनेक साधर्मियों तथा श्रावकगणों को धर्म का मर्म समझने, धर्म संस्कारित होकर आचरण में उतारने हेतु अत्यंत उपयोगी सिद्ध हुईं हैं। इन्हीं में से एक कृति ''जैनागम संस्कार'' में समाविष्ट संपूर्ण 21 अध्यायों में जैन धर्म-संबंधी आगम शास्त्रों में वर्णित तथ्यों को बड़ी सहजता के साथ प्रस्तुत किया गया है। प्रारंभ के कुछ अध्यायों में श्रावक के जीवन में बाल्यावस्था से ही आचरण द्वारा धर्म संस्कार डालने की बात बहुत उत्तम ढंग से कही गयी है। इन्हें पढ़कर यदि जैन धर्मावलम्बी श्रावक उन पर सत्यनिष्ठा से अमल करे या उन्हें अपने आचरण में उतारें तो उसे किसी भी कारणवश कोई भी दुर्व्यसन छू नहीं सकते हैं। पाश्चात्य संस्कृति में मदहोश हो रही, नई पीढ़ी के लिए तो यह कृति एक रत्न स्वरूप है। जैसा कि विदित है कि व्यक्ति जन्म से नहीं वरन कर्म से महान बनता है। जैन धर्म के चारों अनुयोगों के सार को मुनि श्री ने जनसामान्य को दृष्टिगत रखते हुए अत्यंत सरल तरीके से वर्णित किया है। प्रश्नोत्तर के माध्यम से धार्मिक विचारों को सरल ढंग से बताने की कला अमोघ है। जगह-जगह सिद्धांत के विचारों को कथा के माध्यम से समझाने का उद्‌भुत प्रयास किया गया है। ''णमोकार मंत्र माहात्म्य'' से प्रारंभ हुआ यह ''जैनागम संस्कार'' ग्रन्थ ''नैतिकता और शिष्टाचार'' के अध्याय तक सम्पूर्ण हुआ है। इन अध्यायों से मुनि श्री ने जैन श्रावकगणों को प्रधान रूप से रत्नत्रय पालन करने रूप आचरण के विधी विधानों को प्रश्नोत्तर रूप में वितरण करते हुए धर्म में आस्था की जड़ को पैदा किया है। प्रत्येक अध्याय भव्य जीवों के लिए उनके अनुकम्पा भाव से प्रकट हुआ है। अन्य कृति तीर्थोदय काव्य एक लघु पद्य-ग्रंथ होते हुए भी मुनि श्री ने ''गागर में सागर'' भर दिया है। अपने आप में यह काव्य रचना सहज, बोधगम्य एवं अद्वितीय है। इसमें श्रावकों तथा मुनियों के कर्तव्यों का वर्णन करते हुए षोडस-कारण भावना, देव शास्त्र गुरु की वंदना, उनके गुणों का वर्णन, अष्ट मूलगुण एवं

मुनियों के षट आवश्यक, सम्यक्त्व के अष्ट अंग और उनकी लघु कथाएं, सम्यक्त्व के दस भेदों, श्रावक की ग्यारह प्रतिमाओं, समाधिमरण, गुणस्थानों, समोवशरण आदि का समावेश किया है। काव्य की भाषा सरल, साहित्यिक, छन्द दोहा, एवं अलंकार रसमय है। यह लघु काव्य ग्रंथ साधुओं तथा श्रावकों के लिए महत्वपूर्ण सिद्ध होगा, पाठक इसे अध्ययन करते हुए कंठस्थ कर ही मानेंगे। यथा नाम तथा गुण के धनी, माया से विलुप्त मुनि श्री आर्जवसागर जी महाराज आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के सुयोग्य शिष्यों में गिने जाते हैं। आचार्य विद्यासागर जी महाराज के आशीर्वाद व गुरु परम्परा से अब पथ भम्रित समाज को श्रावकोचित धर्म का उपदेश देते हुए मोक्ष मार्ग पर अग्रसर हैं। समाज को अपने स्वास्थ्य एवं धर्म की सुरक्षा के लिए धर्म संस्कारित होना चाहिए ऐसा मुनिश्री का दया भाव प्रकट हुआ है। संस्कार रहित जीवन पशु समान है इसलिए बाल्यकाल में ही बच्चों को धर्म संस्कार देते हुए, सांसारिक बंधन से छुटकारा पाकर मोक्षमार्ग में चलते हुए वीतरागी निर्मोही निर्दोष साधु बनकर मोक्ष सुख के लिये मोक्ष महल पहुंचकर आत्मिक, अक्षय और अनंत सुख में लीन हो जाने का जो मुनिश्री का श्रेष्ठ भाव है, उसके प्रति हमें अपार आनंद है। यदि हमें उनके चरणों में गुरु दक्षिणा देना है तो गुरु दक्षिणा को हम धर्म संस्कारित होने से भी दे सकते हें और दूसरों को भी इस मार्ग पर लाना हमारा कर्तव्य है। उनकी यह मंगल कामना हमारे लिए आशीर्वाद बने ऐसा अभिप्राय रखते हुए हम मुनि महाराज को अनंत बार प्रणाम करते हैं। मुनि श्री आर्जवसागर जी महाराज मोक्षमार्ग पर बढ़ते हुए देश की समाज का कल्याण करते रहें, मुनि श्री शतायु हों-ऐसी वीर प्रभु से प्रार्थना है।

'भक्ति में नियम-संयम जरूरी'

'चाहे भक्ति हो या साधना, उनमें जब तक नियम-संयम, श्रद्धा और समर्पण, आस्था व विश्वास नहीं है, तब तक उनका कोई प्रतिफल मिलने वाला नहीं है। जब नियम-संयम के साथ प्रभु की भक्ति की जाती है, तब निश्चित ही उससे शक्ति प्राप्त होती है। अपने गुरु के प्रति समर्पण और धर्म के प्रति पूरी निष्ठा के भाव जब जागृत होकर पवित्र व सुदृढ़ बनने लगते हैं, तब जीवन सहजता से बदलने लगता है। कर्मों को ढीला व पतला करने के लिए तभी तो प्रभु की भक्ति की महत्वता को सभी धर्मों ने श्रेष्ठ बताया है। भक्ति में भी निष्काम अथवा मोक्ष की कामना से भी जाने वाली भक्ति को सबसे सर्वोत्तम कहा गया है। भक्ति से मन खुशियों से भर उठता है और संसार की जगह जब भक्त प्रभु की शरण में होता है तभी तो पुण्य कर्म संचय हो पाते हैं। इसलिए जब भी प्रभु की भक्ति का अवसर प्राप्त हो, उससे वंचित न रहें। अपनी इन्द्रियों पर संयम का यह भी एक मार्ग है। मन को पवित्र बनाने का भी यह एक पावन तरीका है।'

- मुनिश्री आर्जवसागर जी महाराज

सम्यक् ध्यान शतक

– मुनि आर्जवसागर

गतांक से आगे ....

पृथ्वीधारणा

मध्य लोक है क्षीर सम, सागर शान्त स्वरूप।
जम्बूद्वीप सहस्रदल, इक लख योजन रूप।।

❖

वहाँ कर्णिका मध्य में, श्वेतासन शुभ रूप।
जहाँ विराजित आतमा, बन निर्ग्रन्थ स्वरूप।।

अग्निधारणा

निज नाभि में ऊर्ध्वमुख, स्वर्णिम दल शुभ मान।
सोलह पांखुड़ि स्वर बसें, मध्य बसे र्हं जान।।

❖

अधो मुखी हिय मध्य में, कमल विराजित सोह।
अष्ट पाँखुड़ी कर्म की, दहे ध्यान र्हं होह।।

आतम में प्रकटें जहाँ, गुण अनन्त अभिराम।
सिद्ध बने परमात्मा, सिद्ध हुए सब काम।।

❖

घृत जैसे महके पुनः नहीं दुग्ध में आय।
भव में न अवतार ले, शिव में आतम भाय।।

❖

सकल ज्ञेय ज्ञायक बने, झलकें सभी पदार्थ।
दर्पण वत् आदर्श हैं, गुण अनन्त परमार्थ।।

वायु और जलधारणा

कर्मराख को तीव्र वह, मारुत करती साफ।
मेघों के उस नीर से, थल भी धुलता आप।।

तत्त्व धारणा

यह शुद्धात्म अजीव से, भिन्न सिद्ध है जीव।
परम तत्त्व दर्शन तथा, ज्ञान सहित मम–जीव।।

रूपस्थध्यान

आत्म सर्व चिद्रूप है, ज्ञान मयी सु–विचार।
ध्यान रहा रूपस्थ यह, यतिओं को स्वीकार।।

क्रमशः ....

धर्मप्रभावना एक दृष्टि

(आध्यात्मिक योगी, धर्मप्रभावना गुरुदेव मुनिश्री आर्जवसागर जी के द्वारा २५ विशेषतायुत हुए कार्य)

1. तेरह राज्यों में विहार की विशेषता - बहुभाषा ज्ञान, गुरु-संदेश, अहिंसा व्रत आदि का उपदेश शिष्यानुग्रह के साथ यह मंगल विहार हुआ है।
2. विभिन्न राज्यों में धार्मिक पाठशालाओं की स्थापना सम्बन्धी विशेषता-जिसमें आबाल वृद्धों को धार्मिक संस्कार दिया गया।
3. अमूल्य बारह कृतियों की रचना सम्बन्धी विशेषता-वर्तमान परिपेक्ष्य में संदर्भित विषयानुसार जिसमें वर्णन किया है।
4. हजारों सम्यग्दृष्टि बनाने सम्बन्धी विशेषता-वीतरागता की उपासना पर जोर देते हुए गाँव-नगरों में सम्यग्दर्शन का उपदेश दिया।
5. हजारों लोगों को षोडसकारण व्रत प्रदान सम्बन्धी विशेषता-शुद्धाहार (कुएँ का जल), उपवास, एकाशन पूर्वक।
6. हजारों लोगों को श्रावक साधना संस्कार शिविर सम्बन्धी विशेषता-जिसमें हजारों भव्यों को धर्म से संस्कारित किया गया ।
7. नये मन्दिरों की निर्माण की प्रेरणा सम्बन्धी विशेषता-अनेक नये मन्दिरों के निर्माण हेतु प्रेरणा दी।
8. प्रवचन के विषयों की विशेषताएँ - वर्तमान के लोगों का नाम नहीं लेते हुए, व्यक्तिगत प्रशंसा नहीं करते हुए अनेकान्त या मोक्षमार्ग का प्रस्तुतीकरण किया।
9. मौन की विशेषताएँ - कभी एक वर्ष तक, कभी पूरे वर्षायोग में प्रतिवर्षायोग में 12 से 3 बजे तक, कभी महिलाओं से मौन धारण किया।
10. साम्य व्यवहार की विशेषता - छोटे, बड़े, गरीब, अमीर सबको एक समझते हुए योग्यतानुसार व्रतादि का दान दिया।
11. अन्य मतावलम्बियों में जैन धर्म के संस्कार की प्रेरणा सम्बन्धी विशेषता रही।
12. सहज प्रभावना सम्बन्धी विशेषता- आडम्बर रहित कम से कम वस्तुओं के साथ प्रभावना की है।

13. आहार चर्या सम्बन्धी विशेषता- वृत्ति-परिसंख्यान एक चौके में जाने के बाद लौटने पर अलाभ मानना आदि रूप।
14. त्याग की विशेषता - रसादि में नमक, शक्कर, खोवा, पकवान, विभिन्न मेवा का त्याग।
15. हजारों किलोमीटर अनियत विहार की विशेषता-पूर्व प्रचार किये बिना देश के कोने-कोने में विहार किया।
16. पाँच संगोष्ठी सम्बन्धी विशेषताएँ-अखिल भारतीय विद्वत् संगोष्ठी, डाक्टर्स सम्मेलन, अहिंसा सम्मेलन, कवि सम्मेलन, धार्मिक पाठशाला सम्मेलन।
17. अनेक पंच कल्याणक सम्बन्धी विशेषता-अभी तक 23 पंच कल्याणक मुनिश्री के सानिध्य में सम्पन्न हुये।
18. अनेक महामण्डल विधान सम्बन्धी विशेषता-19 बड़े विधान मुनि श्री के सान्निध्य सम्पन्न हुये।
19. अनेक काव्यरचना की सम्बन्धी विशेषता - काव्य रचना विभिन्न भाषाओं में की है। (हिन्दी, तमिल, कन्नड़, मराठी आदि)
20. षडावश्यक की पूर्णता सम्बन्धी विशेषता-बाहरी प्रभावना हेतु षट् आवश्यक में हीनता नहीं करते।
21. नित्य स्वाध्याय सम्बन्धी विशेषता-प्रतिदिन दो-तीन बार स्वाध्याय करते हैं। प्रतिदिन दो बार प्रवचन भी देते हैं। ऐसे प्रवचन मुनिश्री के आशीर्वाद व प्रेरणा से चल रही श्रुतकेवली और भाव विज्ञान पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहते हैं।
22. अहिंसा सम्बन्धी विशेषता-सूर्य प्रकाश में विहार करते हैं व कुएँ का पानी उपयोग में लाया जाता है।
23. निष्परिग्रहता सम्बन्धी विशेषता - कोई धन, वाहन, लौकिक साधन नहीं रखते हैं।
24. संयमोपकरण सम्बन्धी विशेषता-संयमधारी या ब्रह्मचर्य व्रतधारी से वर्ष में एक बार पिच्छिका परिवर्तन सम्बन्धी विशेषता रखते हैं।
25. शास्त्र दान की विशेषता-स्वरचित आगम को मुफ्त देकर पढ़ने तक के लिए एक नियम (फलादि का त्याग) के साथ पढ़ने की प्रेरणा या संकल्प देते हैं।

उपयुक्त कार्यों की विशेष जानकारी होने पर गुरु स्तुति पूर्वक 25 आलेख तैयार किये जा सकते हैं। भाव विज्ञान के पते पर प्रेषित करने पर हम सम्मानित व प्रकाशित कर आपके कृतज्ञ रहेंगे।

- भाव विज्ञान परिवार

श्री जिनाय नमः

।। परम पूज्य गुरु श्री आर्जवसागराय नमः ।।

पच्चीसवें रजत जयन्ती दीक्षा वर्ष के उपलक्ष्य में

गुरुवर की शताधिक विशेषतायें

1. गुरुवर
2. मुनिवर
3. यतिवर
4. परमेष्ठी
5. पञ्चाचारी
6. उपदेशक
7. साधु
8. अतिथि
9. अनगार
10. ऋषि
11. दिगम्बर
12. भिक्षु
13. योगी
14. श्रमण
15. तपस्वी
16. ध्यानी
17. ज्ञानी
18. सकल-संयमी
19. महाव्रती
20. निर्ग्रन्थ
21. पण्डितमुनि
22. यथाजात रूपी
23. सरल-स्वभावी
24. वात्सल्य-मूर्ति
25. तत्त्व-चिंतक
26. आत्म-साधक मुनि
27. रत्नत्रय-आराधक
28. लोक-उद्धारक
29. शिवसुख-दायक
30. जिनवर-प्रकाशक
31. महाकवि
32. परिषह-विजयी
33. समता-धारी
34. करुणा-धारी
35. सौम्यमूर्ति
36. शुद्धोपयोगी
37. अक्षविषय-त्यागी
38. आशातीत
39. निरारम्भी
40. अपरिग्रही
41. धर्मानुरक्तः
42. अहिंसामूर्ति
43. मोक्ष-नाव-कर्णधार
44. षोडशकारण-प्रणेता
45. उत्तम-पात्री
46. सन्यासी
47. दुःखहर्ता
48. भवतारक योगी
49. सुख-प्रदायक
50. समकितधारी
51. मोक्षमार्गी
52. जिनस्वरूपी
53. पूज्यनीय साधु
54. निःस्वार्थी गुरुवर
55. जग-हितकारी
56. सुप्रवचनकारी
57. सुशीलधारी
58. चारित्रधारी
59. महाविरागी
60. संवेगीयति
61. मोक्षभिलाषी
62. गुणधामी
63. एकाहारी गुरु
64. स्वाध्याय-निरत
65. विशाल हृदय
66. शिष्यों के पालक
67. सुशिष्य
68. विनयवानयति
69. पादयात्री (विहारी)
70. अनियत-भ्रमण
71. सत्यभाषी
72. क्षमामूर्ति

73. धर्म-प्रभावक
74. सदुपदेशी गुरु
75. गंभीर स्वभावी
76. आत्मध्यानी
77. मंगलकारी
78. सन्मार्ग-दर्शायक
79. आगम-पथिक
80. त्यागी महात्मा
81. पाप भीरु ऋषि
82. कर्त्तव्य निष्ठ
83. स्वाधीन साधु
84. जगशोभित
85. गुरुदेव
86. सुजनयति
87. आवश्यकरत
88. शूरवीर मुनि
89. नग्नताधारी
90. वीतरागीसन्त
91. भव्य-कल्याणकर्ता
92. इन्द्रिय-विजयी
93. केशलोंचधारी
94. उपकरणधारी
95. अध्यात्म-निरत
96. धैर्यशाली
97. आदर्शी गुरु
98. चलते फिरते तीर्थ
99. विवेकी पुरुष
100. अनुभवि साधु
101. जिनवाणी-गायक
102. मन-विजेता
103. सुग्रंथ-रचयिता
104. गुरुमार्गी
105. सद्दर्शन-प्रणेता
106. परोपकारी-यति
107. दयालु सुगुरु
108. दृढ़धर्मी-आत्मा
109. प्रसन्नकारी मुनि
110. मृदुभाषी
111. सुगुण स्वामी
112. धर्म-नेता
113. गुण-तेजस्वी
114. ममत्व-त्यागी
115. जग-वंदनीय
116. मनोज्ञमुनि
117. सुसंस्कारी अनगार
118. तरुण दीक्षाधारी
119. अनुपम कृतिकार
120. सौम्य प्रकृतिधारी
121. क्षेमंकर-साधु
122. आध्यात्मिक-योगी
123. उपसर्ग विजेता
124. गुरुमार्गानुचर
125. आर्षमार्गगामी
126. सद्गुणानेवेषी
127. निजात्मानुवेषी

इन विशेषताओं के ऊपर कविताओं की रचनाएँ भी की जा सकती है।

- प्रस्तुति इंजी. महेन्द्र जैन

साफ्ट कोल्ड ड्रिंक्स-कितना नुकसानदायक

कोला आदि कोल्ड साफ्ट ड्रिंक्स के निर्माण में असीमित मात्रा में मिलाए गए रसायनों के कारण स्वास्थ्य पर, खासतौर पर मोटापा, लीवर, हार्ट, कैंसर संबंधित बीमारियों पर तीव्र दुष्प्रभाव पड़ता है। सभी उम्र के शौकीन ग्राहक जाने-अन्जाने में बहुतायत में साफ्ट ड्रिंक्स पीकर विभिन्न शारीरिक एवं मानसिक रोगों को आमंत्रित करते हैं। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर एकत्रित किए गए शोध के आकड़े चौकाने वाले हैं। अतः हम सभी साफ्ट कोल्ड ड्रिंक्स के स्थान पर नीबू पानी, नारियल पानी, मट्ठा-लस्सी, आम का पना आदि का सेवन कर इन बीमारियों को आमंत्रित करने से बचे एवं स्वस्थ रहें।

साभार : पत्रिका, दैनिक समाचार पत्र, भोपाल

ध्यान, आसन और आहार में मानस स्थिति

मन, प्रबन्ध और ध्यान विभिन्न दर्शनों व विज्ञान के आलोक में एक समीक्षात्मक अध्ययन डी.लिट् की उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रबंध की रूपरेखा से संदर्भित विषय ।

अनुसंधानकर्ता-डॉ. संजय कुमार जैन

गतांक से आगे ....

आरम्भ के दो शुक्लध्यान के आलम्बन सहित हैं, शेष दो ध्यान निरालम्ब है। संसारी भव्य पुरुष ध्यान का साधक होता है, उज्ज्वल ध्यान साधन है, मोक्ष साध्य है, तथा अविनश्वर सुख ध्यान का फल है।

तत्त्वार्थसूत्र एवं सर्वार्थसिद्धि में आचार्य पूज्यपाद की व्याख्या से विशेष ज्ञात होता है, इस नियम के अनुसार श्रेणि चढ़ने से पूर्व धर्मध्यान होता है और दोनों श्रेणियों में आदि के दो शुक्लध्यान होते हैं, ऐसा व्याख्यान करना चाहिए।

गुणस्थानों के क्रम से ध्यान की विभिन्न अवस्थाओं में एवं अणुव्रत प्रतिमाओं में और मुनियों के आवश्यकों में सामायिक, शुद्धोपयोग, शुक्लध्यान, स्वरूपाचरण और यथाख्यात् चारित्र के साथ ध्यान और कर्मक्षय से मोक्ष सुख की सिद्धि तथा परम आनन्द की उपलब्धि होती है।

छठवां प्रमत्त संयत गुणस्थान इस मनुष्यगति में 28 मूलगुणों सहित मुनि के होता है। इसके आगे के भी सभी गुणस्थान मनुष्यगति के मुनिव्रत धारक जीवों को ही सम्भव है। सातवां अप्रमत्त संयत गुणस्थान त्रिगुप्ति से सहित मुनिवर के ही होता है।

उपर्युक्त से प्रगट है कि सातवें अप्रमत्त गुणस्थान तक धर्मध्यान तथा आठवें से लेकर बारहवें तक शुक्लध्यान होता है। तत्त्वार्थवार्तिककार आचार्य अकलंकदेव ने इसी अध्याय के सूत्र संख्या 36 तत्त्वार्तिक सं. 14-15 के अन्तर्गत कहा है कि उपशांत कषाय और क्षीण कषाय में शुक्ल ध्यान माना जाता है, उनमें धर्मध्यान नहीं होता है। दोनों मानना उचित नहीं है क्योंकि आगम में श्रेणियों में शुक्लध्यान ही बताया है, धर्मध्यान नहीं। गुणस्थानों की दृष्टि से यह धर्मध्यान चतुर्थ अविरत, पंचम देशविरत, छठा प्रमत्त संयत और सप्तम अप्रमत्त संयत इन चार गुणस्थानवर्ती जीवों के संभव है।

इन चौदह गुणस्थानों से अतीत होने पर आत्मा मोक्ष पद को प्राप्त कर सिद्ध परमेष्ठी अवस्था रूप में अनन्त काल के लिए, अनन्त सुख के साथ सिद्धालय में विराजमान हो जाती है।

प्राणायाम का अर्थ है श्वसन क्रिया पर नियंत्रण । तस्मिन्सतिश्वास प्रश्वासयोर्गतिविच्छेद प्राणायाम : ॥ पतंजलि योग सूत्र 2/49 ॥

प्राणायाम से मन की एकाग्रता होती है। आहार शुद्धि से मन और ध्यान पर प्रभाव पड़ता है।

अहिंसकाहार से परिणामों की निर्मलता और सम्यक ध्यान की प्रसिद्धि है। राग-द्वेषादि विकारों के कारण हमारी आत्मा संसार में परिभ्रमण करती है। इन विकारों के क्षय के लिए आचार्यों ने अनेक मार्गों की सर्जना की है, जिसमें ध्यान व योग का सर्वाधिक महत्व है।

प्राण का आयाम नियन्त्रण ही प्राणायाम है। इससे इन्द्रियों एवं मन के दोष दूर करने में सहायता मिलती है।

यह प्राणायाम पवन का साधना है। सो शरीर में जो पवन होता है वह मुख नासाकादि के द्वारा श्वासोच्छवास द्वारा प्रकट जाना जाता है। इस पवन के कारण मन भी चंचल रहता है। जब पवन वशीभूत हो जाता है तब मन भी वश में हो जाता है। पूरक, रेचक, कुम्भक द्वारा पवन को वश में किया जाता है इस पवन के अभ्यास में हृदय कमल की कर्णिका में पवन के साथ चित्त को स्थिर करने पर मन में विकल्प नहीं उठते और विषयों की आशा भी नष्ट हो जाती है तथा अंतरंग में विशेष ज्ञान का प्रकाश होता है। इस पवन के साधन से मन को वश करना ही फल है। इससे ध्यान में विशेष सहायता मिलती है।

आसन में स्थिरता एवं सिद्धता आने पर श्वास-प्रश्वास की गति में अंतर आना प्राणायाम है। इसके तीन चरण हैं - पूरक, रेचक, कुम्भक।

यह तीन प्रकार से होता है-

1. दीर्घ श्वास प्रश्वास। 2. नाड़ी शोधन प्राणायाम। 3. भ्रामरी प्राणायाम।

इन आसनों से निम्न लाभ होते हैं -

मन की एकाग्रता होती है। श्वास पर नियंत्रण होता है। मानसिक एकाग्रता बढ़ाने में सहायक है। नाड़ियों की शुद्धि होती है। मस्तिष्क की क्रियाशीलता को बढ़ाता है। बुद्धि का विकास होता है। चित्त में अपूर्व आनन्द की प्राप्ति होती है। कब्ज को दूर कर उदर विकार को रोकता है।

स्थिर सुखमासनम्...... महर्षि पतंजलि ॥ 2/46 ॥ पा.यो.सूत्र

शरीर की वह अवस्था जो सुखदायी और स्थिर हो आसन कहलाती है, इसके नियमित अभ्यास से शरीर स्वस्थ एवं सबल बनता है।

पद्मासन - इस आसन में शरीर की आकृति पद्म कमल के समान होती है यह उत्कृष्ट ध्यानात्मक आसन है। इस आसन ध्यान करने का उत्तम लाभ मिलता है। एकाग्रता का विकास होता है। मेरुदण्ड को सबल तथा कमर के निचले भाग की नाड़ियों और माँसपेशियों का लचकदार एवं पुष्ट बनाता है।

क्रमशः.............

भाव विज्ञान परीक्षा बोर्ड, भोपाल (म.प्र.)

परीक्षा हेतु विषय व संदर्भ

I **जैनागम संस्कार** – चारों अनुयोगों पर वर्णित 21 अध्यायों व लगभग 800 प्रश्नोत्तरों पर आधारित। परीक्षा हेतु उम्र–15 वर्ष से ऊपर योग्यतानुसार।

II **जीवन संस्कार** – प्राथमिक संस्कारों से संबंधित चार भागों सहित।
परीक्षा हेतु उम्र–15 वर्ष तक योग्यतानुसार।

III **सर्वोदय सम्यग्ज्ञान शिक्षण समिति** – शीतकाल, ग्रीष्मकाल और वर्षाकालीन सुअवसरों पर आयोजित। विषय या पुस्तकें – जीवन संस्कार, जैनागम संस्कार, तत्त्वार्थ सूत्र, इष्टोपदेश, द्रव्य संग्रह, छहढाला आदि पर आधारित। परीक्षा हेतु उम्र–6 से 70 वर्ष तक।

IV **श्रावक साधना संस्कार शिविर** – वर्षाकालीन
विषय वस्तु – सम्यक्ध्यान शतक, तत्त्वार्थ सूत्र, जैनागम संस्कार, तीर्थोदय काव्य, इष्टोपदेश, द्रव्य संग्रह, पर्यूषण पीयूष, जीवन संस्कार आदि पर आधारित। परीक्षा हेतु उम्र – 16 से 70 वर्ष तक।

विशेष :
1. परीक्षा देने वाले विद्यार्थी या परीक्षार्थी को सप्तव्यसनों का त्यागी, सामाजिक नियमों, शिष्टाचारों के पालनकर्त्ता आचरणवान होना आवश्यक है।
2. परीक्षा स्थानीय ज्ञानियों या शिक्षकों/शिक्षिकाओं द्वारा ली जाकर केवल परीक्षा परिणाम (रिजल्ट) हमारे बोर्ड को प्रेषित करना आवश्यक रहेगा।
3. परीक्षा सामूहिक रूप से परीक्षार्थियों को एक दूसरे से दूर–दूर बिठाकर लेना आवश्यक रहेगा तथा उत्तर पुस्तिकाएँ गोपनीयता के साथ जाँचकर प्राप्त अंकों का विवरण दूसरे दिन ही प्रेषित करना आवश्यक रहेगा। तदुपरांत ही परिणाम घोषित किये जा सकेंगे।
4. हमारा बोर्ड केवल परीक्षार्थी को रंगीन प्रमाण पत्र प्रदान करने हेतु पोस्टल खर्च सहित राशि सौ रुपये प्रति 50 प्रमाणपत्र मात्र स्वीकार करेगा।
5. परीक्षा परिणाम के साथ परीक्षार्थी का पूरा नाम व पता उपर्युक्त राशि सहित भेजने का अनुग्रह करें।
6. राशि चेक से भेजें या ''**भाव विज्ञान**'' के स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, टी.टी. नगर, भोपाल अकाउंट नम्बर **63016576171 (IFS Code SBIN 0030005)** में जमा करा देवें।

पोस्ट भेजने का पता – भाव विज्ञान, एम–8/4, गीतांजली काम्प्लैक्स, कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल – 462003 (म.प्र.)

भाव विज्ञान जैन धर्म प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता

समय : 15 दिन, अंक 100

❉ 20 प्रश्नों में से प्रत्येक प्रश्न पर 5-5 अंक समान हैं।

❉ इन प्रश्नों में से एक प्रश्न का उत्तर दो लाइनों में वाक्य सहित लिखना अनिवार्य है।

❉ उत्तर राष्ट्र भाषा हिन्दी में ही लिखें, लिखकर काटे या मिटाये जाने पर अंक नहीं दिये जावेंगे।

सही उत्तर पर [✔] सही का निशान लगावें -

प्र.1 मुनिवर आर्जवसागर जी को जैनेश्वरी नग्न दिगम्बरी दीक्षा लिये कितने वर्ष हो गये हैं ?
20 [ ], 24 [ ], 25 [ ] 23 [ ]

प्र. 2 मुनिवर की कौन सी कृति ऐसी है जिसका चार भाषाओं में अनुवाद हुआ है?
सम्यक् ध्यान शतक [ ], जैनागम संस्कार [ ] तीर्थोदय काव्य [ ]

प्र.3 केवलज्ञान के बाद होने वाली विभूति (समवशरण) का विशेष वर्णन मुनिवर की किस कृति में है?
धर्मभावना शतक [ ], परमार्थ साधना [ ], तीर्थोदय काव्य [ ]

प्र. 4 मुनिवर ने मुनि दीक्षा कहाँ पर प्राप्त की थी?
सोनागिरि [ ], मुक्तागिरि [ ], अहार जी [ ]

हाँ या ना में उत्तर दीजिये -

प्र.5 गुरु और शिष्य के उपकार का संदेश घड़े की शिक्षा से मिलता है। [ ]

प्र.6 जैनागम संस्कार 22 अध्याय में वर्णित है। [ ]

प्र.7 संस्कार का बोध हमें बचपन के संस्कार कृति से मिलता है। [ ]

प्र.8 बाहर से नो-रियल अंदर में ओरिजनल वाला उदाहरण
परमार्थ साधना कृति में है। [ ]

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए -

प्र.9 पारसचंद के वैराग्य का कारण .... बना ।
[आगम ग्रन्थ, आ. विद्यासागर जी, संसार की असारता का चिंतवन]

प्र.10 पारसचन्द के दीक्षा गुरु .... हैं।
[आ. ज्ञानसागर जी, आ. विद्यासागर जी, आ. शान्तिसागर जी]

प्र.11 पारसचन्द ने अपने गुरु का दर्शन पहली बार .... नगर में किया था।
[दमोह, पथरिया, जबेरा]

कृपया यहाँ से निकालें

दो पंक्तियों में उत्तर दीजिये –

प्र.12 सत्तर प्रकार की भावनाएं कौन सी कृति में गुरुवर ने लिखी हैं उन भावनाओं का प्रथम शब्द लिखिए।

....

....

सही जोड़ी मिलायें :-

प्र.13 जैनागम संस्कार	प्रवचन संग्रह
प्र.14 तीर्थोदय काव्य	21 अध्याय में
प्र.15 सम्यक् ध्यान शतक	700 पद्यों में
प्र.16 परमार्थ साधना	113 पद्यों में

सही (✔) या (✕) गलत का चिन्ह बनाइये :-

प्र.17 मुनिवर ने सम्यक् ध्यान शतक कृति सिद्ध क्षेत्र ग्वालियर में लिखी थी। [ ]

प्र.18 मुनिवर ने तीर्थोदय काव्य की रचना कन्नलम् की ज्ञानातिशय गुफा में की थी। [ ]

प्र.19 मुनिवर ने दीक्षा लेते ही एक वर्ष का मौन धारण किया था। [ ]

प्र.20 मुनिवर की दीक्षा आदिनाथ जयन्ती पर हुई। [ ]

[मुनिवर आर्जवसागर जी महाराज पर आधारित]

प्रतियोगी-परिचय

भाव विज्ञान सदस्यता की रसीद क्रमांक :

नाम .... उम्र ....

पिता/माता/पति का नाम ....

नगर या गाँव का नाम ....

पता..

....

मोबाईल/फोन नं. ....

सदस्यों को भाव विज्ञान प्रेषित करते समय लिफाफे के पते पर रसीद क्रमांक का लेख भी किया जाता है।

भाव विज्ञान जैन धर्म प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता

नियमावली :

1. उत्तर लिखने वाले या उसके पारिवारिक सदस्य की भाव विज्ञान पत्रिका संबंधी आजीवन सदस्यता होनी अनिवार्य है। एक परिवार से एक ही उत्तर पुस्तिका स्वीकार्य होगी । अन्य नहीं।
2. प्रश्न पत्र के पेपर पर ही उत्तर लिखकर भेजें । फोटो कॉपी मान्य नहीं होगी।
3. उत्तर पुस्तिका पर अंक देने का भाव उत्तर पुस्तिका में वर्णित उत्तरों की शुद्धता, लिखावट एवं उम्र पर निर्भर करेगा। अल्प उम्र वाले प्रतियोगी को प्रमुखता दी जावेगी।
4. उत्तर लिखकर काट दिये जाने पर या घिस दिये जाने पर अंक नहीं दिये जावेंगे।
5. उत्तर पुस्तिका की प्रतियोगी को एक फोटोकॉपी करवा लेना चाहिये क्योंकि मुख्य उत्तर पुस्तिका में कोई गलती न हो एवं अगली भाव विज्ञान पत्रिका में आने वाले उत्तरों का प्रतियोगी मिलान कर सके।
6. पत्रिका पहुँचने के पन्द्रह दिनों के भीतर उत्तर अवश्य प्रेषित करें। पत्रिका प्रकाशित होने के एक माह के बाद प्राप्त उत्तर पुस्तिकाएँ प्रतियोगिता हेतु मान्य नहीं की जावेगी।
7. पुरस्कार की राशि मनीआर्डर या बैंक आदि से भेजी जावेगी। प्रतियोगी प्राप्त मूल्य का उपयोग अपने तीर्थ वंदना, पूजा द्रव्य दान, आहार दान, औषधदान, उपकरण दान, पाठशाला की यूनिफार्म आदि धर्म कार्य के द्रव्य में सम्मिलित कर सकते हैं।
8. अगली भाव विज्ञान पत्रिका में सभी श्रेणियों के पुरस्कार विजेताओं के नाम प्रकाशित किये जावेंगे।
9. उत्तर पुस्तिका डाक/पोस्ट से निम्न पते पर प्रेषित की जानी चाहिए।

डॉ. प्रोफेसर सुधीर जैन, 85, डी.के. कॉटेज, दानापानी रेस्टोरेंट के पास, ई-8 एक्सटेंशन, भोपाल (म.प्र.)

* **उपरोक्त प्रतियोगिता के बारे में हमारा उद्देश्य है कि बाल-युवा पीढ़ी भी स्वाध्याय के क्षेत्र में आगे बढ़े एवं घर-घर में चले धर्म संस्कार की पाठशाला।**

प्रथम पुरस्कार : 108 योग्य संख्यक मूल्य, द्वितीय पुरस्कार: 72 योग्य संख्यक मूल्य

तृतीय पुरस्कार : 57 योग्य संख्यक मूल्य

पुरस्कारों के पुण्यार्जक श्री विनोद कुमार जैन, 591, कंचनविला, कृष्ण विहार, वी.के. कौल नगर, अजमेर (राजस्थान)

उत्तीर्ण प्रतियोगी परिचय

प्रथम पुरस्कार

हरीश चंद्र जैन

63/75, हीरापथ, मानसरोवर

जयपुर - 302020

द्वितीय पुरस्कार

सुनीता जैन

341, सेक्टर-15, पार्ट-I,

गुड़गांव (हरियाणा)-122001

तृतीय पुरस्कार

श्रीमती सपना जैन

पंचशील नगर,

भोपाल - 462 003

उत्तर पुस्तिका - दिसम्बर 2011

1. समणसुत्तं का
2. आ. विद्यासागर जी ने
3. उपयोग
4. रत्नकरण्डक का
5. हाँ
6. हाँ
7. ना
8. हाँ
9. सुव्रतसागर
10. शुद्ध आरोग्य
11. सद्संस्कारयुत शिक्षा
12. (क) संकर नहीं, वर्ण-लाभ
    (ख) शब्द सो बोध नहीं, बोध सो शोध नहीं
    (ग) पुण्य का पालन; पाप-प्रक्षालन
    (घ) अग्नि की परीक्षा; चांदी सी राख
13. विद्यासागर
14. मल्लिसागर
15. समयमति
16. समयसागर
17. सही
18. सही
19. गलत
20. सही

भाव विज्ञान परिवार

✳✳✳✳✳ शिरोमणी संरक्षक ✳✳✳✳✳

मेसर्स आर.के. ग्रुप, मदनगंज-किशनगढ़, अजमेर, ● श्री निर्मल कुमार झांझरी, डीमापुर (नागालैंड)

✳✳✳✳ परम संरक्षक ✳✳✳✳

● श्री गौतम काला, राँची ● श्री बुधराज जैन कासलीवाल, पांडीचेरी

✳✳✳ पुण्यार्जक विशेषांक संरक्षक ✳✳✳

● प्रबंधकारिणी समिति, श्री १००८ पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर, कीर्तिनगर, जयपुर ● सकल दिगम्बर जैन समाज, दाँता रामगढ़, जिला सीकर ● श्री कुन्थीलाल, रमेशचंद, नरेश कुमार जैन गदिया, नसीराबाद (अजमेर) ● सकल दिगम्बर जैन समाज एवं वर्षायोग समिति 2011, रामगंजमण्डी ● श्री ताराचंद मित्तल परिवार एवं महेशकुमार अशोक कुमार महेन्द्र कुमार जैन ठोरा, रामगंजमंडी

✳✳ पुण्यार्जक संरक्षक ✳✳

● श्री नीरज S/o श्रीमती चन्द्रकला पाटनी, रांची ● सुशील कुमार, अभिषेक कुमार, रोहित कुमार जैन, पांडीचेरी ● श्री मिट्ठनलाल जैन, नई दिल्ली

✳ सम्मानीय संरक्षक ✳

● श्री वर्धमान विक्रमादित्य जैन, चैन्नई ● श्री पदमराज होळल, दावणगेरे ● श्री सोहनलाल कासलीवाल, सेलम ● श्री संजय सोगानी, राँची ● श्री आकाश टोंग्या, भोपाल ● कु. इन्द्रसेना जैन, जयपुर ● श्रीमती संगीता हरीश बजाज, टीकमगढ़ ● श्रीमती कमलाबाई अशोक जैन साहबजाज, अजमेर ● श्री बी.एल. पचन्ना, बैंग्लुरू ● श्री घनश्याम जैन, कृष्णा नगर, दिल्ली ● श्री कमलजी काला, जयपुर ● श्री अरुणकाला 'मटरू', जयपुर ● श्री महावीरप्रसाद संजयकुमार जैन, इस्पात एंटरप्राईजेस प्रा.लि., कलकत्ता ● श्री नरेश जैन, सूरत (दिल्ली वाले)

✳ संरक्षक ✳

● श्री विजय अजमेरा, रीवा ● श्री के. सी. जैन, डि. एक्साइज अधिकारी, छतरपुर ● श्री एस.एल. जैन (बागड़िया), जयपुर ● श्री गुणसागर ठोलिया, किशनगढ़-रेनवाल, जयपुर ● श्री अजित प्रसाद जैन सराफ, रेवाड़ी ● श्री विजयपाल जैन, भोलानाथ नगर, शाहदरा (दिल्ली) ● श्री दिगम्बर जैन तीर्थ बड़ा मंदिर, हस्तिनापुर (मेरठ) ● श्री संजय जैन, गुड़गांव ● श्रीमती सुषमा रवीन्द्र कुमार, गाजियाबाद ● श्री श्रेयांस कुमार पाटोदी, जयपुर ● श्रीमती अनिता पारस सौगानी, जयपुर ● श्री जितेन्द्र अजमेरा, जयपुर ● श्री ओम कासलीवाल, जयपुर ● श्री मंगलचंद हरकचंद मोतीलाल कमलचंद छाबड़ा, जयपुर ● श्री राकेश जैन, रोहिणी, दिल्ली ● श्री कल्याणमल झांझरी, कलकत्ता ● श्रीमती सुधा महेन्द्र कुमार जैन, भोपाल ● श्री विजय कुमार जैन, छाबड़ा, जयपुर ● श्री कस्तूरचंद सुरेश कुमार जैन, रामगंज मण्डी, कोटा ● श्रीमती हीरामणी चांदमल सेठी, गुवाहाटी ● श्री प्रकाशचंद जैन, उदयपुर ● श्रीमती निधी राहुल जैन, उदयपुर, अनुपम ग्रुप ऑफ कम्पनीज ● श्री अशोक कुमार ड्वारा (जैन), उदयपुर

✳ विशेष सदस्य ✳

● श्री भागचन्द जैन, नसीराबाद, अजमेर

भाव विज्ञान परिवार

✳ आजीवन सदस्य ✳

दमोह
श्री यू.सी. जैन, एलआईसी
श्री जिनेन्द्र जैन उस्ताद
श्री नरेन्द्र जैन सतलू
श्री संजय जैन, पथरिया
श्री अभय कुमार जैन गुड्डे, पथरिया
श्री निर्मल जैन इटोरिया
श्री राजेश जैन हिनोती
श्री राजेश गोकुलप्रसाद जैन

कोपरगाँव
श्री चंदूलाल दीपचंद काले
श्री पूनमचंद चंपालाल ठोले
श्री अशोक चंपालाल ठोले
श्री नितिन मदनलाल कासलीवाल
श्री चंपालाल दीपचंद ठोले
श्री अशोक केशरचंद पापड़ीवाल
श्री सुभाष भाऊलाल गंगवाल
श्री तेजपाल कस्तूरचंद गंगवाल
श्री सुनील गुलाबचंद कासलीवाल
श्री श्रीपाल खुशालचंद पहाड़े
श्री शिखरचंद अशोक कुमार लोहाड़े

छतरपुर
श्री प्रेमचंद कुपीवाले
श्री चतुर्भुज जैन, सब इंजीनियर
श्री रतनचंद देवेन्द्र कुमार बस वाले
श्री कमल कुमार जतारावाले
श्री भागचन्द जैन, ललपुरावाले
श्री देवेन्द्र ड्योढ़िया
अध्यक्ष,चेलना महिला मंडल, डेरा पहाड़ी
अध्यक्ष, मरुदेवी महिला मंडल शहर
पंडित श्री नेमीचंद जैन
डॉ. सुरेश बजाज
श्री प्रसन्न जैन ''बन्टू''

टीकमगढ़
श्री विनय कुमार जैन
श्री सिंघई कमलेश कुमार जैन
श्री संतोष कुमार जैन, बड़माड़ई
श्री अनुज कुमार जैन
श्री सी.बी. जैन, मजना वाले
श्री जिनेन्द्र कुमार जैन, रामगढ़
श्री राजीव बुखारिया
श्री सुनील जैन, मालपीठा वाले
श्री विमल कुमार जैन,मालपीठा
श्री सोनलकुमार संतोषकुमार जैन, खिरियावाले

सीधी
श्री सुनील कुमार जैन, सीधी

ग्वालियर
श्रीमती ओमा जैन
श्रीमती केशरदेवी जैन
श्रीमती शकुन्तला जैन
श्री दिनेश चंद जैन
श्रीमती सुषमा जैन
श्री ब्र. विनोद जैन (दीदी)
श्रीमती सुप्रभा जैन
श्रीमती प्रमिला जैन
श्रीमती मिथलेश जैन
स.सि. श्री अशोक कुमार जैन
श्रीमती मीना जैन
श्रीमती पन्नी जैन, मोहना
श्रीमती मीना चौधरी
श्री निर्मल कुमार चौधरी
श्री कल्याणमल जैन
श्रीमती सूरजदेवी जैन
श्रीमती उर्मिला जैन
श्रीमती विमला देवी जैन
श्रीमती विमला जैन
श्रीमती मोती जैन
श्रीमती अल्पना जैन
श्रीमती रोली जैन
श्रीमती ममता जैन
श्रीमती नीती चौधरी
श्रीमती आभा जैन
श्रीमती सुशीला जैन
श्रीमती पुष्पा जैन
श्रीमती अंगूरी जैन
श्री ओ.पी. सिंघई
श्रीमती मंजू एवं शशी चांदोरिया
श्री सुभाष जैन
श्री खेमचंद जैन
श्री बसंत जैन

असम/गुवाहाटी
वर्धमान इंग्लिश अकादमी, तिनसुखिया
श्री नाथूलाल जैन, नलबारी
श्रीमती इंदिरा छाबड़ा, कामरूप
श्रीमती रेखा विनोद जैन, कामरूप
श्रीमती अमरावदेवी जैन सरावगी, रायगंज
श्रीमती सीमा राजेश काला, धुबड़ी
सुश्री बबीता पहाड़िया, कामरूप

जबलपुर
श्रीमती सितारादेवी जैन
श्री जरत कुमार जैन, डिस्ट्रिक्ट जज

अशोक नगर
श्री प्रमोद कुमार पुनीत कुमार जैन

भिण्ड
श्री सुरेशचंद्र जैन
श्री महेशचंद जैन पहाड़िया
श्री विजय जैन, रेडीमेड वाले
श्री संजीव जैन 'बल्लू'
श्री महेन्द्र कुमार जैन
श्री महावीर प्रसाद जैन
श्रीमती मीरा ध.प. श्री सुमत चंद जैन

जयपुर
श्री राजेश जैन (गंगवाल)
श्री रिखब कुमार जैन
श्री बाबूलाल जैन
श्री कैलाशचंद जी मुकेश छाबड़ा
श्री पदम पाटनी
श्री राजीव काला
श्री सुनील कुमार राजेश कुमार जैन
श्री पवन कुमार जैन
श्री धन कुमार जैन
श्री सतीश जैन
श्री अनिल जैन (पोत्याका)
श्रीमती शीला ड्योड़िया
श्रीमती शांतिदेवी सोध्या
श्री हरकचंद लुहाड़िया
श्रीमती शांतिदेवी बख्शी
श्रीमती साधना गोदिका
श्री राजकुमार लुहाड़िया
श्री दिनेश कुमार जैन
श्री विमल चन्द जैन
श्री प्रेमचंद काला
श्री उम्मेदमल जैन
श्री उत्तमचंद जैन
श्री पदम कुमार जैन
श्री भविष्य गोधा
श्री बृजमोहन जैन
श्री प्रेमचंद जी बैनाड़ा
श्री महावीर जी सोगानी
श्री संजय सोगानी
श्री अरूण कुमार सेठी
श्री विनोद पांडया
श्री वीरेन्द्र कुमार पांडया
श्री नरेन्द्र कुमार जैन
श्री कौशल किशोर जैन
श्री सुशील कुमार जैन
श्री ओम प्रकाश जैन
श्री रिषभ कुमार जैन
श्री वीरेन्द्र कुमार जैन
श्रीमती सुशीला सोगानी
श्रीमती शीला जैन
श्रीमती बीना जैन
श्रीमती उन्नति पाटनी
श्रीमती सुनीता कासलीवाल
श्रीमती अनीता वैद्य
श्रीमती पदमा लुहाड़िया
श्रीमती सुनीता काला
श्री प्रमोद काला
श्रीमती निर्मला काला
श्रीमती मधुबाला जैन
श्रीमती हीरामणि जैन
सुश्री साक्षी सोनी
श्री महावीर कुमार कासलीवाल
श्री अनंत जैन
श्री रामजीलाल जैन
डॉ. पी.के. जैन
डॉ. डी. आर. जैन
श्री दिलीप जैन
श्री टीकमचंद बाकलीवाल
श्री हरीशचंद छाबड़ा
श्री विमल कुमार जैन गंगवाल
श्री पुष्पा सोगानी
श्री राजकुमार पाटनी
श्री श्रीपाल जैन

भाव विज्ञान परिवार

✴ आजीवन सदस्य ✴

श्रीमती पूनम गिरिन्द्र तिलक
श्री पारस सोगानी
श्रीमती अरुणा अमोलक काला
श्री कपूरचंद जी लुहाड़िया
श्रीमती इंद्रा मनीष बज
श्री नरेन्द्र अजमेरा
श्री लाडूलाल जैन
श्रीमती रानीदेवी सुरेशचंद मौसा
श्रीमती आशा सुरेन्द्र कुमार कासलीवाल
श्रीमती आशा रानी सुरेश कुमार लोहाड़िया
श्रीमती बीना विमलकुमार पाटनी
श्रीमती राखी आशीष सोगानी
श्रीमती चंद्रलेखा महावीरप्रसाद शाह
श्रीमती प्रमिला रूपचंद गोदिका
श्रीमती प्रतिभा प्रसन्न कुमार जैन
श्रीमती शांति देवी पांड्या
श्री हेमन्त कुमार जैन शाह
श्री धर्मचंद जैन
श्री मुरालीलाल गुप्ता
श्री पारसचंद जैन कासलीवाल कुम्हेर
श्री निर्मल कुमार पाटनी
श्री मनीष कुमार गंगवाल
श्री नरेन्द्र कुमार जैन
श्री हरकचंद छाबड़ा
श्री कुन्थीलाल जैन
श्री गोपाललाल जैन बड़जात्या
श्री महेन्द्र कुमार जैन साह
श्री सुरेन्द्र पाटनी
श्री सी.एल. जैन
श्री प्रदीप पाटनी
श्री लल्लू लाल जैन
डॉ .विनीत साहुला
श्री उत्तम चंद जैन
श्री मनोज जैन
श्री ज्ञानचंद जैन
श्री सुरेश चंद जैन
डॉ. श्रीमती चिमन जैन
श्रीमती प्रेम सेठी
श्रीमती नीता जैन
श्री सुरेशचन्द जैन

श्री राजेन्द्र जैन अग्रवाल
श्री हरीश कुमार जैन बाकलीवाल
श्री हंसराज जैन
श्रीमती अमिता प्रमोद जैन
श्री रीतेश बज
श्री अनिल कुमार बोहरा
श्री नवीनकुमार छाबड़ा
श्री कमलचंद जैन बाकलीवाल (अंधिका)
श्री महेन्द्र प्रकाश काला
श्री बाबूलाल सेठी
श्री प्रेमचंद छाबड़ा
श्री प्रदीप जैन बोहरा
डॉ. राजकुमार जैन
श्री अरुण शाह
श्री महेन्द्र कुमार जैन
श्री प्रकाशचंद जैन काला
श्री प्रकाशचंद जैन बड़जात्या
श्री कैलाश फूलचंद पांड्या
डॉ. विजय काला
श्री सम्पतलाल जैन
श्री जीवन्धर कुमार सेठी
श्री सुशील कुमार काला
श्री धर्मचंद रतनलाल जैन
श्रीमती ज्योत्सना पंकज जैन दोषी
श्री अमित अंधिका जैन

मदनगंज-किशनगढ़

श्री स्वरूप जैन बज (जैन)
श्री नवरतन दगड़ा
श्री सुरेश कुमार जैन (छाबड़ा)
श्री प्रकाशचंद गंगवाल
श्री ताराचंद जैन कासलीवाल
श्री पदमचंद सोनी
श्री भागचंद जी दोशी
श्री धर्मचंद जैन (पहाड़िया)
श्री प्रकाशचंद पहाड़िया
श्री भागचंद जी अजमेरा

किशनगढ़-रेनवाल

श्री केवलचंद ठोलिया
श्री निर्मलकुमार जैन
श्री महावीर प्रसाद गंगवाल
श्री नरेन्द्र कुमार जैन

श्री धर्मचंद छाबड़ा जैन
श्री भंवरलाल बिनाक्या
श्री धर्मचंद पाटनी
सुश्री निहारिका जैन विनायका
श्रीमती मधु बिलाला
श्री पवन कुमार जैन बाकलीवाल
श्री राहुल जैन
श्री राकेश कुमार रांवका
श्री बिरदीचंद जैन सोगानी
श्री धर्मचंद अमित कुमार ठोलिया
श्री भागचंद अजमेरा

दौसा

श्री मनीष जैन लुहाड़िया

जोबनेर

श्री महावीर प्रसाद
श्री भागचंद बड़जात्या जैन
श्री भागचंद गंगवाल
श्री जितेन्द्र कुमार जैन
श्री संजय कुमार काला
श्री रमेश कुमार जैन बड़जात्या
श्री दीपक कुमार जैन शास्त्री
श्री रमेश कुमार जैन शास्त्री
श्री निलेश कुमार जैन
श्री महेन्द्र कुमार पाटनी
श्री पदमचंद बड़जात्या जैन
श्री प्रेमचंद ठोलिया जैन
श्री शांतिकुमार बड़जात्या
श्री ताराचंद जैन (कामदार)
श्री मूलचंद जैन
श्रीमती सुनिता दिनेश कुमार बड़जात्या

इन्दौर

श्री आई.सी. जैन
श्री संदीप प्रेमचंद जैन

लखनऊ

स्व. डॉ. पी.सी. जैन

चैन्नई

श्री डी. भूपालन जैन
श्री सी. सेल्वीराज जैन
श्री ताराचंद जैन

नागौर

श्री प्रकाशचंद पहाड़िया, डेह

नसीराबाद

श्री महावीर प्रसाद चंद्रप्रकाश सेठी
श्री ताराचंद पाटनी
श्री शान्तिलाल पाटनी
श्री शान्तिलाल गोधा
श्री शान्तिलाल जैन सोगानी
श्री सुशील कुमार गदिया
एडवोकेट अशोक कुमार जैन
श्री टीकमचंद भागचंद जैन
श्री ताराचंद पारसचंद सेठी
श्री महावीर प्रसाद राजकुमार गदिया
श्री प्रकाश चंद जैन

अजमेर

श्री महावीर प्रसाद काला
श्रीमती सविता जैन, वीरगांव
श्रीमती स्नेहलता प्रेमचंद पाटनी
श्री रूपचंद छाबड़ा
श्री सुरेशचंद पाटनी
श्रीमती चंद्रा पदमचंद सेठी
श्री चंद्रप्रकाश बड़जात्या
श्री भागचंद निर्मल कुमार जैन
श्री निर्मलचंद जी सोनी
श्री नरेन्द्र कुमार प्रवीण कुमार जैन
श्रीमती सरोज डॉ. ताराचंद जैन
श्रीमती आशा तिलोकचंद बाकलीवाल
श्री नवरतनमल पाटनी
डॉ. रतनस्वरूप जैन
श्रीमती निर्मला प्रकाशचंद सोगानी
श्रीमती निर्मला सुशील कुमार जी पांड्या
श्रीमती शरणलता नरेन्द्रकुमार जैन
श्रीमती मंजु प्रकाशचंद जी जैन (काला)
श्री संदीप बोहरा
श्री राकेश कुमार जैन
श्री राजेन्द्र कुमार अजय कुमार दनगसिया
श्री पूरनचंद, देवेन्द्र, धीरेन्द्र कुमार सुथनिया
श्री नाथूलाल कपूरचंद जैन
श्रीमती चांदकंवर प्रदीप पाटनी
श्री विनोद कुमार जैन
श्री नरेश कुमार जैन
इंजीनियर श्री सुनील कुमार जैन
श्री जिनेन्द्र कुमार जैन

भाव विज्ञान परिवार

✷ आजीवन सदस्य ✷

श्रीमती उषा ललित जैन
श्री रमेश कुमार जैन
श्रीमती आशा जैन
श्री ताराचंद दिनेश कुमार जैन
श्री मनोज कुमार मुन्नालाल जैन
श्री ज्ञानचंदजी गदिया
श्री निहालचंद मिलापचंद गोटेवाला
श्री विशाल जैन कैलाश बड़जात्या

पिसानगन

श्री पुखराज पहाड़िया
श्री सज्जन कुमार दोशी
श्री अशोक कुमार राकेश कुमार दोशी

कुचामनसिटी

श्री चिरंजीलाल पाटोदी
श्री सुरेश कुमार अमित कुमार पहाड़िया
श्री विनोद कुमार पहाड़िया
श्री लालचन्द पहाड़िया
श्री गोपालचंद प्रदीप कुमार पहाड़िया
श्री सुरेश कुमार पांड्या
श्री सुन्दरलाल रमेश कुमार पहाड़िया
श्री संजय कुमार महावीर प्रसाद पांड्या
श्री कैलाशचन्द प्रकाशचंद काला
श्री विनोद विकास कुमार झाँझरी
श्रीमती चूकीदेवी झाँझरी
श्री अशोक कुमार बज
श्री संतोष प्रवीण कुमार पहाड़िया
श्री वीरेन्द्र सौरभ कुमार पहाड़िया
श्री भंवरलाल मुकेश कुमार झाँझरी
श्री ओमप्रकाश शीलकुमार झाँझरी

भोपाल

डॉ. प्रो. पी.के. जैन, एमएएनआईटी
श्री एस.के. बजाज
श्री प्रसन्न कुमार सिंघई
श्री सुभाष चंद्र जैन
श्रीमती विमला रमेश चंद्र जैन
श्री सुनील जैन
श्री राजेन्द्र के जैन (चौधरी)
श्री आर.के. जैन, एक्साइज इंसपेक्टर
श्री तेजकुमार एस.एल. जैन
श्री विनय कुमार राजकुमार जैन
श्री सुशील जैन (सुशील आटो)
श्रीमती शांतिबाई जैन

मुम्बई

श्री एन.के. मित्तल, सी.ए.
श्री हर्ष कोछल्ल, बी.ई.
श्री दीपक जैन
श्री धीरेन्द्र जैन
श्रीमती शर्मिला ललितकुमार बज जैन
श्रीमती रंजना रमेशचंद शाह

संगमनेर, अहमदनगर

श्री जैन कैलासचंद दोघूसा, साकूर

सीकर

श्री महावीर प्रसाद पाटोदी
श्री महावीर प्रसाद जैन लालसवाले (देवीपुरा कोठी)
श्री ज्ञानचंद जैन, फतेहपुर शेखावटी

दाँता-रामगढ़

श्री विजय कुमार कासलीवाल, दाँता
श्री निशांत जैन, दाँता-रामगढ़
श्री राजकुमार काला, दाँता-रामगढ़
श्री विनोद कासलीवाल, दाँता
श्री सुनील बड़जात्या, दाँता-रामगढ़
श्री अमरचंद सेठी, दाँता-रामगढ़
श्री हरकचंद जैन झांझरी, दाँता
श्रीमती मायादेवी कैलाशचंद जैन

रानोली (सीकर)

श्री विनोद कुमार जैन
श्री राजकुमार छाबड़ा
श्री शान्तिलाल रांरा
श्री रतनलाल कासलीवाल
श्री सुभाषचंद छाबड़ा
श्री विकास कुमार काला
श्री ज्ञानचंद बड़जात्या
श्री गुलाबचंद छाबड़ा (डाकुड़ा)
श्री सुशील कुमार छाबड़ा

अलवर

श्री मुकेश चंद जैन
श्री सुंदरलाल जैन
श्री शिवचरनलाल अशोक कुमार जैन
श्री सुरेशचंद संदीप जैन
श्री राकेश नथ्थूलाल जैन
श्री चंद्रसेन जैन
श्री अंकुर सुभाष जैन
श्री बंशीधर कैलाशचंद जैन
श्री अशोक जैन
श्री राजेन्द्र कुमार जैन
श्री धर्मचंद जैन
श्री महावीर प्रसाद जैन
श्री प्रवीन कुमार जैन
श्री महेन्द्र कुमार जैन
श्री दीपक चंद जैन
श्री राजीव कुमार जैन
श्री प्रेमचंद जैन
श्री अनंत कुमार जैन
श्री के.के. जैन
श्री सुशील कुमार जैन
श्री सुमेरचंद जैन
श्री अनिल कुमार जैन राखीवाला
एडवोकेट श्री खिल्लीमल जैन

सागर

श्री मनोज कुमार जैन
श्री प्रदीप जैन, इनकमटैक्स

तिजारा

श्री शिखरचंद जैन
श्री हुकुमचंद जैन
श्री आदीश्वर कुमार जैन
अध्यक्ष, श्री पार्श्वनाथ दि. जैन मंदिर
श्री अशोक कुमार जैन
श्री मनीष जैन

पांडीचेरी

श्री पारसमल कोठारी
श्री गणपतलाल नेमीचन्द कासलीवाल
श्री नेमीचन्द प्रसन्न कुमार कासलीवाल
श्री चम्पालाल निरंजन कुमार कासलीवाल
श्री नथमल गौतम चन्द सेठी
श्री मेघराज जयराज बाकलीवाल
श्री आसूलाल भागचंद कासलीवाल
श्री मदनलाल राजेन्द्र कुमार कासलीवाल
श्री सोहनलाल अरिहंत कुमार पहाड़िया

रेवाड़ी

श्री सुरेशचंद जैन
श्री अजित प्रसाद जैन पंसारी
श्री पदम कुमार जैन
श्री नानकचंद जैन
श्री राजकुमार जैन
श्री रविन्द्र कुमार जैन
श्री अजय कुमार जैन
श्री पोलियामल जैन
श्री दालचंद जैन
श्री ब्रह्मचारी वीरप्रभु जैन
श्री सुभाषचंद जैन
श्री वीरेन्द्र कुमार जैन बजाज
श्री देवेन्द्र कुमार जैन सराफ
श्री राहुल सुपुत्र अशोक कुमार जैन
श्री महेन्द्र कुमार जैन
श्रीमती चमनलता एवं कान्ता जैन
श्री देवेन्द्र कुमार बादनलाल जैन
श्री अरविंद जैन (प्रेसीडेंट)
श्री के. एस. जैन, धारूहेड़ा

दिल्ली

श्रीमती अनीता जैन
श्री विजेन्द्र कुमार जैन, शाहदरा
श्री एम.एल. जैन, शाहदरा
श्री अंकित कुमार जैन, शाहदरा
श्री लोकेश जैन, शाहदरा
श्रीमती राजरानी, ग्रीनपार्क
श्री इन्द्र कुमार जैन, ग्रीनपार्क
श्रीमती रेनू जैन, ग्रीनपार्क
श्रीमती पुष्पा जैन, ग्रीनपार्क
श्रीमती रुकमणी जैन, ग्रीनपार्क
श्रीमती हेमा जैन, ग्रीनपार्क
श्री मनीष सुभाषचंद जैन, कैलाश नगर

मेरठ

श्री हर्ष कुमार जैन
श्री देवेन्द्र कुमार जैन सराफ
श्री इंद्रप्रकाश जैन, मवाना

पटियाला

श्रीमती कमलारानी राजेन्द्र कुमार जैन

हस्तिनापुर

श्री विजेन्द्र कुमार जैन

राँची

श्री योगेन्द्र जैन

गाजियाबाद

भाव विज्ञान परिवार

✳ आजीवन सदस्य ✳

श्री गौरव जे.डी. जैन
श्री विकास जैन
श्री राजकुमार जैन
श्री एन.सी. जैन
श्री निखिल जैन
श्रीमती सोनिया सुनील कुमार जैन
श्री अशोक कुमार कुंवरसेन जैन
श्री सुभाष जैन
श्री पवन कुमार जैन
श्री प्रवीन कुमार महेन्द्र कुमार जैन
श्रीमती शारदा जैन
श्री डी.के. जैन
श्री अनिल कुमार जैन
श्री जयकुमार नितिन कुमार जैन
श्री प्रवीण कुमार रोशनलाल जैन
श्री अशोक कुमार मालती प्रसाद जैन
श्री प्रदीप कुमार जैन
श्री महेन्द्र कुमार जैन
श्रीमती अनुपमा राहुल जैन
श्री सुरेश चंद जैन
श्री विवेक जैन

गुड़गांव

एडवोकेट श्री कुंवर सेन जैन
श्री देवेन्द्र जैन
श्री रमेश चंद संदीप कुमार जैन
श्री श्रेयांस जैन
श्री महावीर प्रसाद जैन
श्रीमती सुषमा जैन
श्री सतीश चंद मयंक जैन
श्री रोबिन सी.के. जैन
श्री चंद्रप्रकाश मित्तल
श्रीमती विजय जैन
श्री कैलाश चंद जैन
श्री संजय जैन

पूर्णिया (बिहार)

श्री चांदमल जैन

कलकत्ता

श्री हरीशचंद्र जैन
श्री मनी खजांची

बेंग्लुरू

श्री प्रसन्न कुमार जैन छाबड़ा
श्री जयकुमार जैन
श्री रमेश कुमार जैन

ब्यावर

श्री दीपक कुमार जैन
श्री महेन्द्र कुमार छाबड़ा
श्री धर्मचन्द रांवका जैन
श्री देवेन्द्र कुमार फागीवाला
श्री सारस मल झांझरी
श्री सुशील कुमार जैन बड़जात्या
श्री अशोक कुमार सोगानी
श्री भैरूलाल काला
श्री धरमचन्द जैन
श्री प्रबोध कुमार बाकलीवाल
श्री सुरेश चन्द बड़जात्या
श्री कमल कुमार दगड़ा
श्री शांतीलाल गदिया
श्री सुशील कुमार जैन
श्री पदम चन्द गंगवाल
श्री मयंक जैन
श्री मुकेश कुमार जैन
श्री चिरन्जी लाल पहाड़िया
श्री मनोज कुमार जैन
श्रीमती पुष्पा सोनी
श्री अशोक कुमार काला
श्री विजय कुमार फागीवाला
श्री पारसमल अजमेरा
श्री स्वरूपचन्द रांवका
श्री डॉ. दीपचन्द सोगानी
श्रीपाल अजमेरा
श्री घनश्याम जैन शास्त्री

सुजानगढ़

श्री पारसमल पाण्ड्या

मेड़ता रोड/सिटी (नागौर)

श्री जे.डी. जैन
श्री राजेन्द्र जैन
श्री अमरचंद धर्मचंद पाटनी
श्री रामरतन पाटनी

रामगंज मण्डी, कोटा

श्री शांतिलाल जैन
सुश्री कोमल महावीर जैन
श्री पदम कुमार विमल कुमार जैन
श्री रमेशचंद जी विनायका
श्री अमोलकचंद बागड़िया
श्रीमती उषा बागड़िया जैन
श्री शिखरचंद टोंग्या
श्री प्रकाश विनायका
श्री पदम कुमार राजमल जैन
श्री केवलचंद लुहाड़िया
श्री अजीत कुमार सेठी
श्री महावीर कुमार शाह
श्री अमर कुमार जैन
श्री प्रेमचंद सबड़ा
श्री जयकुमार विनायका
श्री नेमीचंद ठौरा
श्री नाथूलाल जैन
श्री सुशील कुमार जैन
श्री निर्मल कुमार नीलेश कुमार जैन
श्री निर्मल कुमार लालचंद जैन
श्री सुमेरमल पहाड़िया
श्री रामगोपाल सैनी
श्री महेन्द्र कुमार जैन सबद्रा
श्री शिखरचंद्र बागड़िया
श्री चैतन्यप्रकाश जैन
श्री हनुमानसिंह गुर्जर (जैन), तहसीलदार
श्री देशराज जोशी
श्रीमती पदमा विनोदकुमार जैन विनायका
श्रीमती कल्पना विनोद कुमार मित्तल

कोटा

श्री अभिषेक रूपचंद जैन
श्री पीयूषकुमार डॉ. पदमचंद दुगेरिया
श्री कैलाशचंद मोतीलाल जैन
श्री प्रकाशचंद सोहनलाल जैन
श्री निर्मल कुमार जैन सेठी

सोनकच्छ, देवास

श्री पदमकुमार पियूष कुमार छाबड़ा

पारोला (जलगांव)

श्री जयंतीलाल हीरालाल जैन

झालरपाटन (झालावाड़)

श्री विमल कुमार जैन (पाटोदी)

सिंगोली (नीमच)

श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन पाठशाला

बूंदी

श्री रूपचंद मोहनलाल जैन

भिण्डर (उदयपुर)

श्री ऋषभ कुमार जैन सीघवी
श्री विनोद कुमार गंगावत जैन
श्री आदिश्वरलाल कन्हैयालाल
श्री मनोहरलाल मदनलाल भुलावत
श्रीमती अनीता सुरेन्द्र जैन
श्रीमती रामचंदी राजमल कठालिया
श्री बाबरमल जैन
श्री पारसमल जैन (लिखमावत)
श्री सुरेश कुमार जैन (धर्मावत)
श्री प्रकाशचंद भादावत
श्री बसन्तीलाल वाणावत
श्री राजेश कुमार जैन (भादावत)
श्री महावीरलाल कठालिया
श्री अम्बालाल अनिल कुमार गोदड़ोत
श्री बगदीलाल गौतमलाल नागदा
श्री सतीशचंद्र जैन
श्री शान्तिलाल फान्दोत
श्री भंवरलाल जैन नागदा

उदयपुर

श्री महेन्द्र कुमार टाया
श्री कुन्थु कुमार जैन (गणपतोत)
श्री चन्द्र कुमार मित्तल
श्री राजेन्द्र कुमार जेन
श्रीमती सुशीला जैन पांड्या
श्री थावरचंद जैन
श्री रोशनलाल लालावत जैन
श्री रमेश कुमार वैद्य
श्री भगवतीलाल भादावत
श्रीमती मंजु कैलाशचंद्र जैन
श्रीमती निर्मला जीवन्धरलाल जैन
श्री महावीर जैन
श्रीमती रेखा शैलेन्द्र कुमार सांगानेरिया
श्री झमकलाल टाया
श्री सुरेशचंद जैन भादावत
श्री नवीन जैन

कृपया यहाँ से निकालें

भाव विज्ञान पत्रिका की सदस्यता हेतु आवेदन-पत्र

रंगीन फोटो

मैं .... मधु (शहद), मांस, मद्य (नशा) का त्यागी, धर्म का अनुसरण करने वाला पिता/पति श्री ....
जिला .... प्रदेश ....से
भाव विज्ञान पत्रिका हेतु शिरोमणी संरक्षक रुपये 51000/- ☐ पुर्ण्याजक विशेषांक संरक्षक सदस्य रूपये 24500/- ☐ परम संरक्षक रुपये 21000/- ☐ पुण्यार्जक संरक्षक सदस्य रुपये 18,000/- ☐ सम्मानीय संरक्षक सदस्य रुपये 11,000/- ☐ संरक्षक सदस्य रुपये 5,100/- ☐ विशेष सदस्य रुपये 3,100/- ☐ आजीवन सदस्य रुपये 1,100/- ☐ राशि देकर आजीवन सदस्यता स्वीकार करता/ करती हूँ।

मेरा पत्र व्यवहार का पता :- ....
....
जिला .... प्रदेश ....
पिनकोड .... एस.टी.डी. कोड ....
फोन नम्बर .... मोबाईल ....
ई-मेल .... है।

क्या आप अपने मोबाईल पर महाराज श्री के विहार/कार्यक्रम के फ्री मैसेज प्राप्त करना चाहेंगे ?(हाँ/नहीं)

दिनांक : हस्ताक्षर

कार्यालयीन उपयोग हेतु

श्री/श्रीमति .... पिता श्री ....
को शिरोमणी संरक्षक/पुण्यार्जक विशेषांक संरक्षक/परम संरक्षक/पुण्यार्जक संरक्षक/सम्मानीय संरक्षक/संरक्षक/विशेष सदस्य/आजीवन सदस्यता क्रमांक ....प्रदान की जाती है।

दिनांक हस्ता. सम्पादक/प्रबन्ध सम्पादक

नोट : (1) ''भाव विज्ञान'' भोपाल के पक्ष में (ड्राफ्ट अथवा) स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, टी.टी. नगर, भोपाल में नेट/कोर बैंकिंग सुविधा के अंतर्गत एस.बी. एकाउंट नं. **63016576171** एवं **IFS Code SBIN0030005** में नगद राशि सीधे जमा कर प्रकाशक को रसीद की छायाप्रति प्रेषित कर सदस्यता शुल्क की रसीद प्राप्त की जा सकती है।

सदस्यता आवेदन पत्र भेजन का पता :

''भाव विज्ञान'', एम-8/4, गीतांजली काम्प्लैक्स, कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल- 462 003 (म.प्र.) को प्रेषित करें।

भाव विज्ञान

(त्रैमासिक पत्रिका)

BHAV VIGYAN

आशीर्वाद एवं प्रेरणा

संत शिरोमणी आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के धर्मप्रभावक शिष्य

मुनि श्री आर्जवसागर जी महाराज

पत्रिका की विशेषताएं एवं उद्देश्य :

☛ विशिष्ट साधक आचार्यों या साधुओं के और डाक्ट्रेट व विशिष्ट विद्वानों के शिक्षाप्रद आलेखों, प्रवचनों एवं समीक्षाओं का प्रस्तुतिकरण ।

☛ सत् साहित्य समीक्षा।

☛ अहिंसात्मक जीवन शैली।

☛ व्यसन मुक्ति अभियान ।

☛ हिंसक पदार्थों व हिंसक सौंदर्य प्रसाधन का निरसन।

☛ नई पीढ़ी के लिए वैज्ञानिक शैली में जैन दर्शन का प्रस्तुतिकरण।

☛ रूढ़िवाद, मिथ्यात्व व शिथिलाचार रहित अनेकान्त, स्याद्वाद और सापेक्षवाद शैली में जैनत्व का प्रस्तुतिकरण।

☛ धार्मिक प्रश्नोत्तरी व काव्य संग्रह की प्रस्तुति।

☛ धार्मिक पर्व आयोजन व मुनि संघ समाचार प्रस्तुति इत्यादि।

नोट : **(1) ''भाव विज्ञान'' भोपाल के पक्ष में (ड्राफ्ट अथवा) स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, टी.टी. नगर, भोपाल में नेट/कोर बैंकिंग सुविधा के अंतर्गत सेविंग बैंक एकाउंट नंबर-63016576171 एवं IFS Code SBIN0030005 में नगद राशि सीधे जमा कर प्रकाशक को रसीद की छायाप्रति प्रेषित कर सदस्यता शुल्क की रसीद प्राप्त की जा सकती है।**

सदस्यता आवेदन पत्र भेजन का पता

''भाव विज्ञान'' एम-8/4, गीतांजली काम्पलैक्स, कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल-462003 (म.प्र.) को प्रषित करें।

सम्पर्क : डॉ. अजित कुमार जैन - 09425601161, डॉ. सुधीर जैन - 09425011357

कृपया पत्रिका को पढ़कर अपने परिजन को दें या दि. जैन मंदिर, वाचनालय अथवा किसी दि. जैन धर्म क्षेत्र पर विराजमान कर दें।

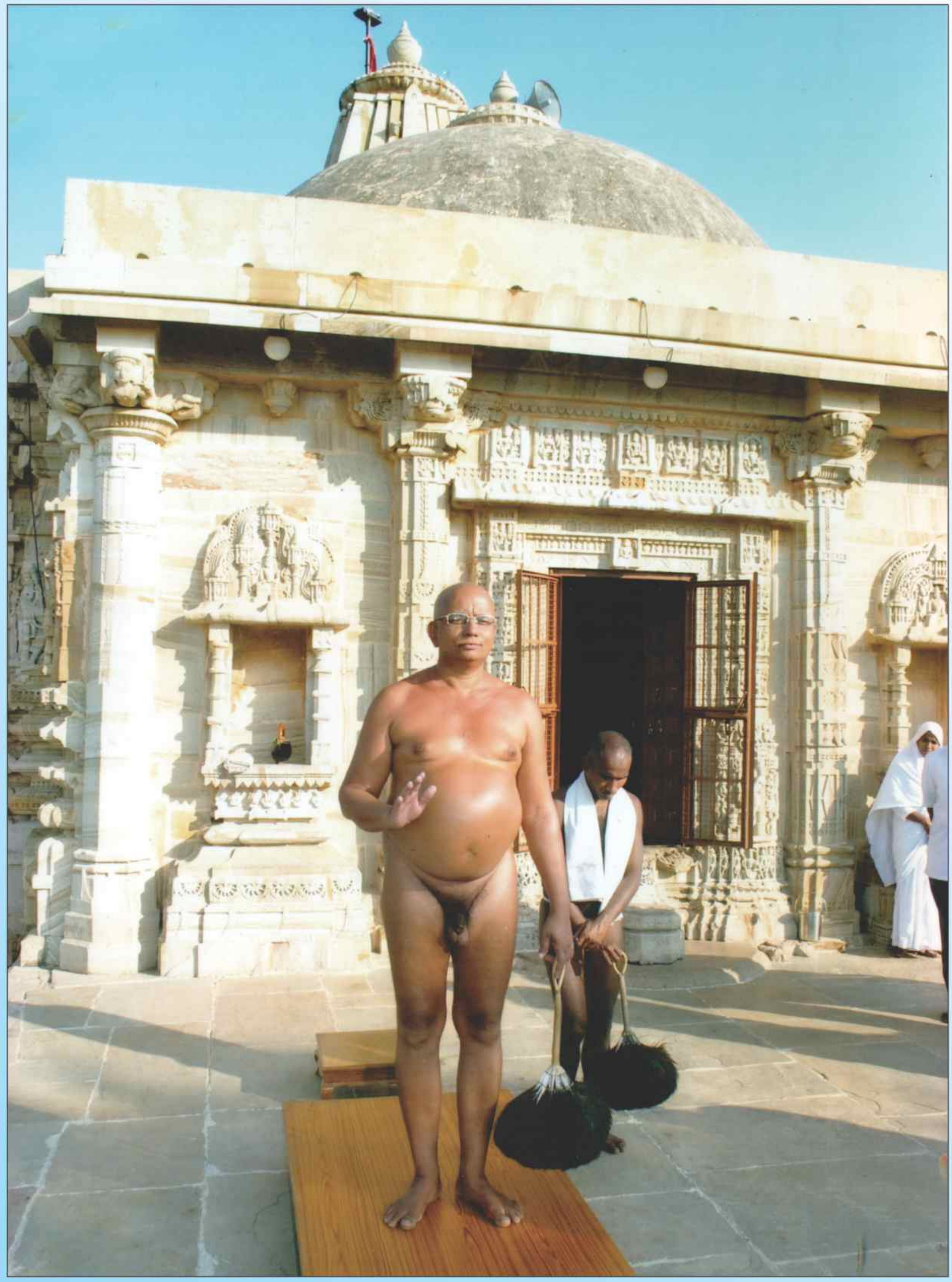

चित्तौड़गढ़ पर दिगम्बर जैन मंदिर

रजि. क्रं. **MPHIN/2007/27127**

कीर्ति स्तम्भ के सामने मुनिश्री 108 आर्जवसागर जी महाराज एवं चित्तौड़गढ़ के समाज के लोग

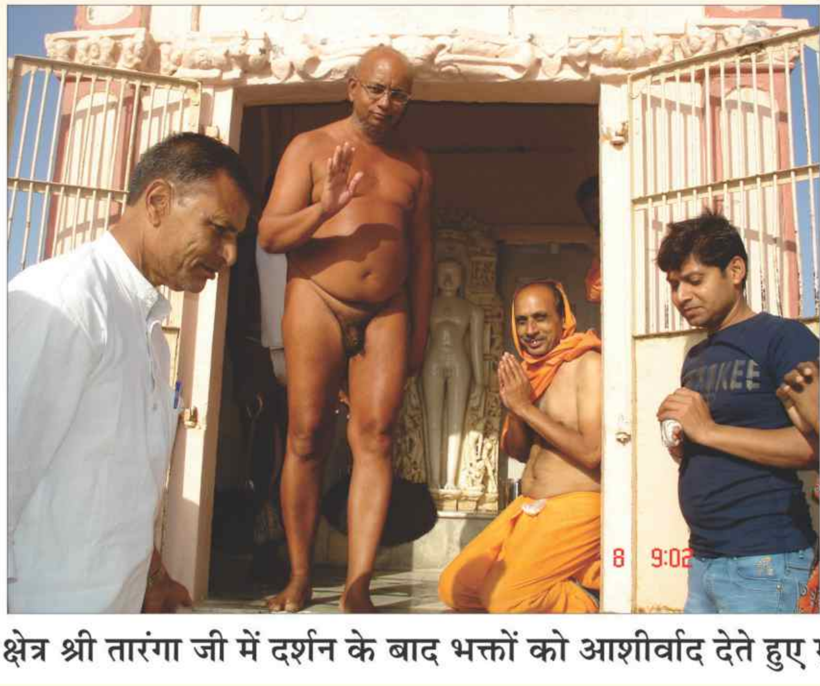

सिद्ध क्षेत्र श्री तारंगा जी में दर्शन के बाद भक्तों को आशीर्वाद देते हुए मुनिश्री

स्वामी एवं प्रकाशक : श्रीमती सुषमा जैन द्वारा मुद्रक : पवन कुमार जैन द्वारा पारस प्रिन्टर्स, 207/4, सांईबाबा काम्पलेक्स,
जोन-1, एम.पी. नगर, भोपाल से मुद्रित एवं एमआईजी-8/4, गीतांजली काम्पलैक्स, कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल (म.प्र.) से प्रकाशित।
सम्पादक - श्रीपाल जैन 'दिवा,' एल-75, केशर कुंज, हर्षवर्धन नगर, भोपाल-3 (म.प्र.)